सुनहरा अवसर सुनहरा अवसर सुनहरा अवसर

भव्य पत्र–पत्रिका एवं पुस्तक–प्रर्दशनी

प्रकाशकों/लेखको/संपादको से साहित्य मेला–08 के अवसर पर पत्र–पत्रिका एवं पुस्तक प्रर्दशनी हेतु पत्र/पत्रिकाएं एवं पुस्तकें आदि आमंत्रित है.

अंतिम तिथि: ३० जनवरी २००८

आयोजन तिथिः १७ फरवरी २००८

विस्तृत जानकारी के लिए लिखें या भेजें

सचिव

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी–93,नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद **कानाफुसी:** 9335155949 ईमेल:sahityaseva@rediffmail.com

काव्यसंग्रह, निबंधसंग्रह,लघु कथा संग्रह व कहॉनी संग्रह हेतू रचनाएं आमंत्रित है

काव्य संग्रह हेतु-कवियों से दो रचनाएं, सचित्र जीवन परिचय तथा १००/-रुपये,

अथवा दस रचनाएं, सचित्र जीवन परिचय तथा ५००/-रुपये

निबध संग्रह हेतु-दो निबंध, अधिकतम पांच सौ शब्द, सचित्र जीवन परिचय सहित २५०/-रुपये

अथवा पॉच लेख, अधिकतम पांच सौ शब्द, सचित्र जीवन परिचय सहित १०००/-रुपये

लघु कथा संग्रह हेतु-दो लघु कथांए, अधिकतम दो सौ शब्द, सहयोग राशि २५०/-रुपये

अथवा पॉच लघु कथांए, अधिकतम दो सौ शब्द, सहयोग राशि ५००/-रुपये

कहानी संग्रह हेतु -एक कहानी, अधिकतम पॉच सौ शब्द, सचित्र जीवन परिचय तथा सहयोग राशि २५०/-रुपये

अथवा तीन कहानी, अधिकतम पॉच सौ शब्द, सचित्र जीवन परिचय तथा सहयोग राशि ५००/-रुपये

प्रेषण की अंतिम तिथिः ३० मार्च २००८

के साथ आमंत्रित है. अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए जवाबी टिकट लगे लिफाफे के साथ लिखें/भेजें-आप अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०:एस.बी. ५३८७०२०१०००६२५६ में भी जमा कर सकते है

प्रसार सचिव,

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी–93,नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद **कानाफुसी:** 9335155949

विश्व स्नेह समाज

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

वर्षः७ अंकः३ जनवरी०८,इलाहाबाद

पत्रिकाओं ने कभी नहीं बनाया 'तिल को ताड़'

आरंभ से ही पत्रिकाओं पर पाठकों का भरोसा रहा है. इसका कारण सत्य की छानबीन और समाचारों का तटस्थ प्रस्तुतिकरण है. पत्रिकाओं के संपादक व संस्थापक भरसक प्रयास करते है कि आम आदमी की, समाज की आवाज को उठाया जाया. आज चहुंओर पहले अखबार देने की होड़ मची रहती है. मगर पत्रिकाओं ने कभी उतावलापन नहीं दिखाया. सामान्यतः पत्रिकाओं में तथ्यों की कसौटी पर खरे उतरने वाले समाचार ही मिलते है. वर्तमान में कुछ पत्रिकाएं है जो चाटुकारिता पर उतर आयी है. इसके बावजूद अधिकतम पत्रिकाओं ने समाज को नयी दिशा देने का हमेशा प्रयास किया है. सामान्यतः पत्रिकाओं में अफवाह व झूठी खबरों को स्थान नहीं दिया जाता है. यद्यपि पत्रिकाएं अपने संक्रमण काल से गुजर रही है. फिर भी अपने पथ से विचलित नहीं हुई है. सरकारी विज्ञापनों की तो बाट जोहते ही पत्रिकाओं के मालिकों को दिन निकल जाते है. सरकारी विज्ञापनों के नियम शर्तो की कठिनतम सीढ़ी को पार करना सामान्यतः पत्रिकाओं के लिए सम्भव नही होता और प्राइवेट विज्ञापन की तो बात ही छोड़िए. प्राईवेट विज्ञापन तो व्यक्तिगत व्यवहार पर मिलते है. एक बार मिल गया दूबारा मिले कि नहीं इसकी कोई गांरटी नहीं होती है.

जिससे समाज में, देश में सुधार हो. स्वतंत्रता पूर्व से आज तक जो भी समाज में बदलाव आयें है, क्रांतियां हुई है उनके मूल में लघु पत्रिकाओं का सबसे महत्वपूर्ण योगदान रहा है. वैसे भी पत्रिकाएं जितने उत्साह व गति से निकलती है उससे कहीं अधिक गति से बंद भी होती है. सरकार को चाहिए कि लघु पत्रिकाओं को प्रोत्साहित करें. लघु पत्रिकाओ के विज्ञापन की कुछ राशि वार्षिक निर्धारित करें जिससे इनके नियमित प्रकाशन में कठिनाइयों का सामना न कर

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई

सम्पादकीय कार्यालयः

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसीः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com
gokul_sneh@yahoo.com

आवश्यक सूचनाः
1.पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।
स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

अंदर पढ़िए

प्रेरक प्रसंग–4
अपराध का महिमामंडनःन्यूज चैनलों पर–5
साहित्यकारः केशव चंद्र वर्मा–6
कैलाश गौतम पर विशेष–7
झांसी से प्रबल प्रेरणा ली थी सुभाष ने–08
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबन्धकला–10
आत्म हत्या क्यों–13
हस्ताक्षर में छिपा है व्यक्तित्व–25
व्यक्तित्व–12,16,17
स्नेह बाल मंच–24
कविताएं–7,14,15,16,21,22,23,26,27, 29
साहित्य समाचार–27
अध्यात्म– 18 कहानी–14,20,22,
लघु कथा–32 स्वास्थ्य–28
ज्योतिष–29, चिट्ठी आई है–30
समीक्षा– 33,34

झोपड़ी और महल

महाराज विक्रमसिंह अपनी न्यायप्रियता के लिए प्रसिद्ध थे. महाराजा अपने लिए एक महल बनवा रहे थे. महल का नक्शा बन चूका था. एक समस्या आड़े आ रही थी. महल के निर्माण स्थल के समीप ही एक झोपड़ी थी. झोपड़ी के कारण महल की शोभा प्रभावित हो रही थी.

महाराजा ने झोपड़ी के मालिक को बुलवाया और अपनी समस्या उसे बतलायी. महाराजा ने झोपड़ी के बदले काफी रकम देने का प्रस्ताव उसके सम्मुख रखा.

झोपड़ी के मालिक ने महाराजा से कहा-'महाराज, क्षमा करें, आपका प्रस्ताव हमें स्वीकार नहीं है. झोपड़ी हमें जान से भी अधिक प्यारी है. इसमें मेरा जन्म हुआ, बच्चे बड़े हुए और मेरी पूरी जिन्दगी इसी में कट गई. मैं इसी झोपड़ी में ही मरना चाहता हूँ.

महाराजा ने सोचा-गरीब के साथ ज्यादती करना अन्याय है. झोपड़ी यही रहेगी. जब लोग इस शानदार महल को देखेगें, तो मेरे सौन्दर्य बोध की प्रशंसा करेगें. महल के समीप इस झोपड़ी को देखकर मेरी न्यायप्रियता और सहृदयता व दया की भी प्रशंसा करेंगे.

श्याम सुन्दर 'सुमन', भीलवाड़ा, राजस्थान

+++++++++++++++++++++++++++++++++

आदाब अर्ज

तुलसी दल सा दल नहीं, बील पत्र सा पत्र।
वंशीवर सा वर नहीं, दुनिया में अन्यत्र।।

सारे रोगों को हरे, औषधी तुलसी दल।
सारे पापों को नशे, पावन गंगा का जल।।

पावन गंगाजल सहित, तुलसीदल मुंख माह।
राम-नाम जपता रहे, अंत परम पद पाय।।

लौकिक मुक्ति के लिये, अंत काल का यह भाय।
पावत गंगा जल सहित, तुलसी दल मिल जाय।।

क्यों करता संसार में, मोह द्रोह अभिमान।
माया, ममता स्वार्थवश, यह तेरा अज्ञान।।
पर पीड़ा निज स्वार्थवश, कभी न करिये आप।
यहीं सभी को भोगना, जैसे जिसके पाप।।

सबको अपना जानिये, करो सभी से प्यार।
अखिल चराचर सहित ही, वसुधा घर परिवार

पं. महेश बोहरे, गुना, म.प्र.

बुझी हुयी वे राख फूंककर, जला रहे हैं अंगीठी
आरक्षण की खीर आज तक, जिन्हें लग रही मीठी.

पग पग अतिक्रमण लीलायें, हर पद है आरक्षित.
हर एक छोटी मछली मानों, बड़ी से है अब भक्षित.

कलयुग में किरकेट का, इक इक रन गिन जाय
किसान कर रहे खुदकुशी, शासन शतक छुपाय।

बता रहा हूँ आपको, घातक है दलतन्त्र
प्रजातन्त्र का भ्रूणवध, करता आया हन्त्र।

करता आया हन्त्र, इसी ने बापू को मारा
खण्ड-खण्ड कर दिया है भारत, लूटा देश है सारा।

पं. मुकेश चतुर्वेदी 'समीर', सागर, म.प्र.

सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, आस्तेय, आस्वाद।
ब्रहमचर्य, अस्पर्श, श्रम, सच्चा गॉधीवॉद।।

मानवीय लक्षण ग्रहण, करे जो तम को त्याग।
सच्चाई, अपनत्व से, जात बुराई भाग।।

कल्पवृक्ष खुद बन गये, उनके अपने कर्म।
जिन्होंने अपना लिया, सच्चाई का धर्म।।

सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, जो लेता अपनाय।
बन जाता है वह स्वयं, अपना ही पर्याय।।

परहित चिन्तन जो करें, अपनी चिन्ता छोड़।
उनको आवश्यक नहीं, करनी जोड़ा तोड़।।

सत्मारग पर जो चलें, अपना आपा खोय।
मन प्रसन्न हो जात है, उनके दर्शन होय।।

खाने पीने मौज में समय किया बेकार।
अब पछताये क्या मिलें, दुःख का खड़ा पहार।।

डॉ. मोहन 'आनन्द', सम्पादक, कर्मनिष्ठा, भोपाल, म.प्र.

एक ही धर्मतत्व को प्राणी पृथक-पृथक रुप में ग्रहण करते हैं. सूत्रकृतांग

खुलासा

अपराध का महिमामंडन: न्यूज चैनलों पर

✍अमलेश राजू

अपराध रिर्पोटिंग में छोटी-मोटी वारदातों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने की होड़ लगी है. न केवल अपराधियों के वहशीपने को दिखाया जाता है बल्कि और घटनाओं को इस तरह बताया जाता है कि मानो रिपोर्टर मौके पर मौजूद था. कुछ मामलों में तो रिर्पोटर जज की तरह फैसला करते दिखते है.

सुबह होते ही न्यूज चैनलों पर अपराध की खबरों का बोलबाला नजर आने लगता है. जो भी चैनल खोलिए उस पर अपराध की खबरों को बढ़ा-चढ़ा कर पेश करने की होड़ दिखती है. खबरें दिखाने वालों का मानना है कि लोग ऐसी खबरों पर ज्यादा ध्यान देते हैं. इनकी टीआरपी आम बुलेटिनों से कहीं ज्यादा है. दरअसल टीवी चैनलों में सनसनी फैलाने की बढ़ रही होड़ से अपराध पत्रकारिता का एक अलग स्वरुप सामने आया है. इसमें जहां एक ओर भारतीय संस्कृति और सभ्यता का दुर्बल रूप सामने आने लगा है वहीं अमेरिका उपनिवेशवाद से प्रभावित चीजें ज्यादा दिखाई जाने लगी है. लोग इस प्रकार के ऊल-जुलूल कार्यक्रम को देखने को बाध्य होते हैं. कोई भी चैनल खोलिए उसके हेडलाईस में देश के किसी भी हिस्से में घट रही या काफी पहले घटी खबरों की जानकारी रहती है. बेरोजगारी या किसानों की आत्महत्याओं पर हो रही संसद में बहस से ज्यादा महत्व इन खबरों को देने के पीछे चैनलों के अपने मायने है. कारण बलात्कार की खबरो में पीड़ित परिवार का सारा हुलिया और रेखाचित्र दिखाने के लिए भी चैनलों में होड़ लगी हुई है. वहीं पीड़ित परिवार को आगे होने वाली दिक्कत के बारे में कोई पत्रकार नहीं सोचता. यह सब कुछ वैसे ही हो रहा है जैसे किसी थिएटर के परदे पर लोग अक्सर देखते है. चैनलों की इस आपाधापी का असर प्रिंट मीडिया पर भी दिखने लगा है.

अपराध रिपोटिंग में छोटी-छोटी वारदातों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने की होड़ लगी है. न केवल अपराधियों के वहषीपने को दिखाया जाता है बल्कि और घटनाओं को इस तरह बताया जाता है कि मानों रिर्पोटर मौके पर मौजूद था. कुछ मामलों में तो रिपोटर जज की तरह फैसला करते दिखते है. मनगढंत बातों की संजीदगी से पेश करने का कई बार विपरीत असर भी पड़ता है. चैनलों में गलाकाट होड़ का नतीजा यह है कि अपराध की घटनाओं को विशेष रिर्पोट बनाकर सुबह से शाम तक लगातार दोहराया जाता है. दिन और रात में दिखाए जाने वाले इस प्रकार के कार्यक्रमों से लोगों में बेवजह दहशत ही पैदा होती है. राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण पदों पर रहने वाले एक नेता ने बताया कि अब चैनलों पर अपराध की खबरें हावी हो गई है. उसे देखने का मतलब ही क्या है, जब राष्ट्रीय महत्व की खबरों के बदले लोगों में निराशा पैदा करने वाली खबरे दिखाई जा रही है. अपराध के अलावा भी कई विषय है. शिक्षा, राजनीति, स्वास्थ्य और ग्रामीण मुद्दे से जुड़े विषयों और हाशिए पर जाते आम लोगों की खबरो की उपेक्षा हो रही है.

पहले अपराध की खबरों में रिर्पोटर सच्चाई तक जाते थे और हकीकत बयां करने में जरा भी नहीं हिचकिचाते थे चाहें क्यों न इसके लिए उन्हें जेल भी जाना पड़े. अब पुलिस में दर्ज एमआईआर के मुताबिक खबरे बनती है. एफआईआर में पीड़ित से बयान लिया जाता है और उसे हु-बहू कागज पर उतार दिया जाता है. पत्रकार यह मान बैठते हैं कि इसी में सच्चाई है. अब पत्रकारों के पास समय नहीं है कि वे उन अपराधों के पीछे जाएं. लखनऊ की मधुमिता शुक्ला, मॉडल जेसिका लाल, दिल्ली विश्वविद्यालय की छात्रा प्रियदर्शिनी मट्टू और शिवानी भटनागर जैसे चर्चित और टॉप लेबल की खबरों में तो फॉलोअप हो जाता है पर जहां गरीबों पर जुल्म होता है वहां आमतौर पर पत्रकार मजबूत पक्ष के साथ खड़ा नजर आता है. अपराध की रिर्पोटिंग का मतलब आम लोगों की राय में यह है कि दोषियों की धड़पकड़ और भ्रष्टाचार का खुलासा किया जाता है. लेकिन चैनल की भूमिका इससे अलग हटकर चटखारे लेने वाले तत्वों में शामिल होने के रुप में अधिक दिखाई पड़ती है. इनकी नजर में अपराध को

निर्मूल करने का कोई उद्देश्य नहीं होता बल्कि आपराधिक खबरों की सनसनी फैलाने और अपनी टीआरपी बढ़ाने में ज्यादा से ज्यादा रूचि होती है. स्टिंग ऑपरेशन 'चक्रव्यूट' ओर आपरेशन 'दुर्योधन' हुआ और देश के कई बड़े लोग बेनकाब हुए ये सब अपराध की खबरों के लिए अच्छी कोशिशें थी लेकिन ऐसी कोशिश कम होती है.

सामान्य तौर पर अपराध की रिर्पोटिंग नए प्रशिक्षु पत्रकारों के हाथों में सौपी जाने लगी है. अगर कुछ चैनल वालों ने अनुभवी पत्रकारों को लगाया भी है तो वे भी इन्हीं प्रशिक्षु पत्रकारों जैसा नजरिया पेश करते नजर आते है. इन नव सिखुए पत्रकारों को भारतीय दंड संहिता की उतनी ही जानकारी है जितनी पुलिस के एक प्रशिक्षु जवान को होती है. बलात्कार के मामले दर्ज होने के बाद डॉक्टरों से उसी की पुष्टि हुई या नहीं इसके लिए इन रिर्पोटरों को समय नहीं होता. खबरे ज्यादा से ज्यादा सनसनीखेज तरीके से पेश की जाए और पीड़ित ही नहीं उसके परिवार वालों का बायोडाटा उपलब्ध कराया जाए इसमें चैनलों की रूचि ज्यादा होती है. इसी की नकल प्रिंट मीडिया भी करने लगा है और इसमें खुद को गौरवान्वित महसूस करता है. टीवी चैनलों की ज्यादातर खबरें आम लोगों के सरोकार से अलग दिखती है. इसका असर आने वाली पीढ़ी पर जितना सकारात्मक पड़ेगा. उससे ज्यादा नकारात्मक रूप में ही पड़ेगा.

अपराध सामाजिक व्यवस्था में अपवाद की चीज होती है. यह आम बात नहीं होती है. इसे मीडिया वाले भूल गए है. चैनलों के साथ-साथ प्रिंट मीडिया वाले भी इस समय अपराध की खबरों को महिमामंडित कर रहे है. दाउद इब्राहिम की बेटी की शादी की खबर को सभी चैनलों ने जिस तरह पेश किया वह अपने-आप में प्रमाण है. चैनलों ने अपने रिर्पोटर भेजे. शादी के पहले की तैयारी और बाद में मेहमानों की आवभगत का जो दृश्य दिखाया गया, वह महिमामंडन के अलावा और क्या हो सकता है. बबलू श्रीवास्तव का अपने आपराधिक इतिहास पर एक किताब लिखने को टीवी चैनलों ने तो उसे इस तरह पेश किया मानो उसे अब लेखनी का खिताब भी मिलने वाला है, और कोई विश्वविद्यालय उसे हाथों-हाथ अपने पाठ्यक्रम में शामिल कर लेगें. गेंगस्टर फजलू रहमान को अभिनेत्री शिल्पा शेट्ठी से जोड़कर दिखाना और उसका राजनीति में आने की इच्छा बतलाना आखिर अपराध और अपराधियों का महिमामंडन नहीं तो और क्या है. इस तरह की कोई एक दो नहीं बल्कि सैकड़ों घटनाएं हो रही है. इससे समाज पर क्या असर पड़ेगा इसे किसी चैनल ने शायद नहीं सोचा होगा.

साभारःअन्तर्राष्ट्रीय श्रोता समाचार, अगस्त०७

साहित्यकार केशवचंद्र वर्मा नहीं रहे

प्रसिद्ध हिंदी कवि, लेखक और समालोचक केशव चंद्र वर्मा नहीं रहे. लंबी बीमारी से जूझते हुए २५ नवम्बर की सायंकाल उनका निधन हो गया. परिमल संस्था के सहयोगी रहे केशवचंद्र वर्मा पिछले कुछ दिनों से बीमार चल रहे थे. लेकिन उन्होंने अपनी लेखनी को बंद नहीं किया. इन दिनों वे परिमल का इतिहास लिख रहे थे, जिसका एक भाग प्रकाशित हो चुका है. १९२५ में फैजाबाद में जन्में केशव चंद्र वर्मा की शिक्षा-दीक्षा इलाहाबाद में ही पूरी हुई. यहीं वह आकाशवाणी से जुड़े और यहीं से प्रोड्यूसर के पद से सेवानिवृत हुए. आकाशवाणी के कई कार्यक्रमों को लोकप्रिय बनाने में उनकी बड़ी भूमिका रही. उन्होंने ४० से भी अधिक पुस्तकें लिखी. कविता, संस्मरण और व्यंग्य आदि सभी प्रमुख विधाओं में उन्होंने योगदान दिया. कविताएं वह केशव कालीधर के नाम से लिखते थे. साहित्य के प्रति उनके योगदान को देखते हुए उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से उन्हें वर्ष १९९४ में साहित्य भूषण सम्मान दिया गया. इसके अलावा उन्हें कई और सम्मान भी प्राप्त हुए.

इन दिनों वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के मध्यकालीन इतिहास विभाग की डॉ. वंदिता वर्मा, के साथ रहते थे. उनके दोनों बेटे बाहर रहते हैं.

उनके निधन पर विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के अध्यक्षा श्रीमती विजय लक्ष्मी विभा, सचिव गोकुलेश्वर द्विवेदी, श्री राजकिशोर भारती, डॉ. भगवान प्रसाद उपाध्याय, ईश्वर शरण शुक्ल, श्रीमती जया शुक्ला, डॉ०कुसुमलता मिश्रा 'सरल' आदि ने शोक व्यक्त किया.

८ जनवरी को वरिष्ठ हास्य कवि व गीतकार स्व० कैलाश गौतम के जन्म दिवस पर विशेष

बरखा रानी

चाल सुधारा चाल सुधारा
बरखा रानी चाल सुधारा।।
कब्बौ झूरा कब्बौ बाढ़
केसे केसे लेई राढ़
खोतवन से बस दुआ बंदगी
खरिहनवन से भाई चारा।।
सोच समझ के पाठ पढ़ावा
पानी में जिन आग लगावा
कब तक रहबू आसमान पर
तू निचवों तनी निहारा।।
अब जिन बरा धूर में जेंवर
सब बूझत हौ ई खर सेवर
कवने करनी गया बइठबू
पहिले कुल क पुरखा तारा।।
कब तक अपने मन क करबू
हमरे छाती कोदो दरबू
ताले ताले धूर उड़त हौ
कागज पर तू खाना इनारा।।
दिनवां रतियां रटै पपीहा
उल्लू भइलै आज मसीहा
कौवा भंजा रहल हौ मोती
मुँह जोहत हौ हंस बेचारा।
फागुन चइत में पानी पानी
सावन भादों में बेइमानी
जेही क कुल छाजन-बाजन
वहिके पतरी खांडा बारा।।

कडुवा कडुआ थू हौ

कडुआ कडुआ थू हौ प्यारे
मीठा मीठा गप्प
बड़े बड़े घड़ियाल बकुलिया
लोकैलपालप्प।।
घर में खेलै ओक्का बोक्का
होला पाती खेत में
डहरी डॉड़े पटकी पटका
ऑख मिचोली रेत में
जब जब हारै नाक सिकोड़ै
रोवै टपाटप्प।।
सॉझ सबेरे गोइयॉ बदलैं
जइसे पान पनेरी
दर बदलै खूब सोच समझ के
जइसे जतुर अहेरी
एहर बाइसकोप देखावै
ओहर झाई झप्प।।
कत्तों लासा कत्तों चारा
कत्तों जाल बिछाबै
पेटा लेवै खातिर सबके
बेटा बाप बनावै
बारी-बारी कुऑ झॅकावै
गीनै छपाछप्प।।
कुल बिद्या आवैले एकरे
का चोरी बेइमानी
हर हांड़ी क नून हौ चिखले
घाट घाट क पानी
आड़े आड़े लंगी मारै
मुँह पर कहै बक अप्प।।
ऑख निकालै जीभ उपारै
बन्नर नियर नचावै
डंडा के बल भीड़ बटोरै
आपन जै बोलवावै
जाने केकर-केकर अब तक
हिस्सा गइल हड़प्प।।

पत्रिका की प्रथम वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित हिंदी-उर्दू काव्य गोष्ठी में स्व० कैलाश गौतम को माल्यार्पण करते हुए संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

क्या रात सुहानी है क्या खूब नज़ारा है
आ जाओ तुम्हें दिल ने ऐसे में पुकारा है।
पीते हैं लहू दिल का, सो जाते हैं भूके ही
बिन मॉ के दुलारों का फ़ाक़ों पे गुजारा है।
ये हिन्द की धरती है, आकाश है भारत का
हर फूल है इक गुलशन हर ज़र्रा सितारा है।

अनु जसरोटिया,
कठुआ, जम्मू काश्मीर

किसी दिन सामने आओ हमारे रुबरु बैठो
ये टेलीफोन पर बातें हमें अच्छी नहीं लगती।
ऊँचा उठना हो जिन्हें उन के लिये जीने बहुत
गिरने वालों के लिए मौजूद गहरी खाइयाँ।।

अनु जसरोटिया, कठुआ, जम्मू काश्मीर

२३ जनवरी को जन्म दिवस पर

झांसी से प्रबल प्रेरणा ली थी सुभाष ने

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और उनका युग बलिदान एवं बर्तानिया औपनेवेशिक शासकों के विरुद्ध स्वतंत्रता संग्राम के अथक संघर्ष की वीरोचित गाथा हैं. महात्मा गांधी के साथ बर्तानियाँ शासकों से लड़ाई के मार्ग को लेकर उनके विरोध के बावजूद आजादी की लड़ाई में सुभाष बाबू के महान योगदान ने सारी पीढ़ी को मार्गदर्शन दिया है. २१ अक्टूबर १९४३ को सुभाष बाबू ने सिंगापुर के मैदान में घोषणा की थी,-"आजाद हिन्द फौज के जवानों! आज के दिन से मेरे जीवन में दूसरा कोई प्रसन्नता का दिवस नहीं होगा. हमें वह शुभ अवसर आज परम पिता परमेश्वर ने दिया है कि मै समस्त संसार को आज बताऊ की हिन्दुस्तान को आजाद कराने की फौज बन गई है. इसने फौज का सभी प्रशिक्षण लिया है एवं सिंगापुर के युद्ध के मैदान में दुश्मन से लड़ने के लिए खड़ी हुई है. यह वह फौज है जो केवल भारत को अंग्रेजों के चंगुल से आजाद ही नहीं करायेगी बल्कि हिन्दुस्तान की भावी सेना का निर्माण भी इसी का परम कर्तव्य होगा."

उन्होंने कहा "१७५७ में अंग्रेजों के हाथों पहली बार हार खाने के बाद भारत की जनता निरन्तर १०० वर्षो से अधिक समय तक कठिन और तीखी लड़ाई लड़ती रही. इस युग का इतिहास बहादुरी से भरा है. इस युग के इतिहास के पन्नों में सिराजुदुल्ला, टीपू सुल्तान, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे आदि के नाम सदा के लिए स्वर्ण अक्षरों में अंकित रहेंगें." दिसम्बर १९३९ में जब नेताजी झांसी आये तो हार्डी गंज में स्व० रघुनाथ विनायक धुलेकर की अध्यक्षता में हुई सभा में अंत में आकाश की ओर हाथ उठाकर उन्होंने घोषणा की थी-मैं इस देश की आजादी के लिए अब कुछ करुंगा, कुछ करूंगा, कुछ करूंगा, कुछ करूंगा. इस गुलाम देश की स्वतंत्रता की घड़ी आ पहुंची है और इसके लिए एक महा प्रयास की आवश्यकता है. २२ अक्टूबर १९४३ को आजाद हिन्द फौज में रानी झांसी रेजीमेन्ट के प्रशिक्षण शिविर के उद्घाटन पर नेताजी ने कहा था- "दुर्भाग्य से झांसी की रानी हार गई, पर यह उनकी हार नहीं थी, यह भारत की हार थी. उनका बलिदान हो गया, किन्तु उनकी आत्मा कभी नहीं मर सकती. भारत एक बार फिर झांसी की रानियों को पैदा करेगा और भारत को गुलामी से मुक्ति दिलायेगा. महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता से सम्बोधन करने वाले सबसे पहले यदि कोई व्यक्ति थे तो वे थे श्रीयुत नेताजी सुभाष चन्द्र बोस. गांधी और सुभाष के विचारों में मतभेद जरूर थे परन्तु २३ अक्टूबर १९४३ को सुभाष चन्द्र बोस ने अमेरिका एवं ब्रिटेन के खिलाफ युद्ध की घोषणा की तो उन्होंने सबसे पहले महात्मा जी से ही आर्शीवाद मांगा था. सिंगापुर में २६ जून १९४५ को सुभाश बाबू ने अपने भाषण में कहा था, "विद्रोही का बाना है ऑखों में आशा के सपने, हाथ में मौत के फूल और दिल में आजादी का तूफान. अंग्रेजों ने जिन भारतीय वीरों को तोपों से उड़ा दिया, गोलियों से भून दिया, उनका दर्द मेरी पसलियों में चिपक गया, उनकी आहें मेरे गले में धंस गई, उनका खून मेरी ऑखों में उतर आया है. आप फिर भी समझते हैं कि हम समझौते की ओर नजर उठाकर देख सकेंगे. हिन्दुस्तानी खून इतना पतला नहीं होता."

रंगून में १९४३ में बहादुर शाह के मकबरे पर स्वतंत्र भारत के अन्तिम बादशाह की याद में नेताजी ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा था- "हम भारतीय धार्मिक विश्वासों को अलग रख देशभक्त बहादुरशाह का स्मरण करते है इसलिए नहीं कि वे वह महापुरुष थे जिन्होंने शत्रुओं से लड़ने के लिए भारतीयों का आहवान किया था, बल्कि इसलिए कि उनके झण्डे के नीचे सभी प्रांतो, सभी धर्मो के मानने वालों ने युद्ध किया था. वह महापुरुष जिसके पावन झण्डे के नीचे स्वतंत्रता के इच्छुक मुसलमान, हिन्दू और सिखों ने साथ-साथ लड़ने वालों की आत्माओं में विष्वास का अंतिम कण बाकी है, भारत की तलवार लन्दन की छाती को लगातार छेदती रहेगी."

सन् १९४३ में सुभाष बाबू ने महात्मा जी को ३२ पेज का जो पत्र दिया था यदि उस पर अमल होता तो आज देश और समाजवादी देशों की दुनिया ही कुछ और होती. इन पत्रों को अब प्रकाशित होना चाहिए. सुभाष ने तो

१६४३ में ही अंडमान-निकोबार में तिरंगा झण्डा फहरा दिया था. सच्चे अर्थो में सुभाष ही भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे."जय हिन्द का नारा राष्ट्रीय नारा घोषित होना चाहिए. ५ जुलाई १६४२ को कांग्रेस कार्य समिति की बैठक में बड़ी व्यथा के साथ गांधी जी ने कहा था-आज मेरा बेटा सुभाष यहॉ नहीं है. यदि वह मेरे साथ होता तो मुझे तुम में से किसी की भी जरुरत नहीं थी." बंगाल के कांग्रेसी नेता किरण शंकर राय महात्मा जी की इन्हीं भावनाओं की बात कही थी,"सुभाष के प्रति उनके स्नेह ने अनजाने में ही युद्ध की समूची स्थिति के बारे में उनके विचारों को प्रभावित किया था." एक और जगह उन्होंने लिखा है, "मैंने यह भी देखा कि सुभाष नहीं थे, पर अब उनके विचारों में बदलाव दिखाई दे रहा है. उनकी बहुत सी बातों से यह लगने लगा है कि जिस साहस और तरकीब से सुभाश बोस भारत से निकले, उसके वे प्रशंसक थे."

जब रूस में कम्युनिस्टों की कार्यवाहियों का उषाकाल था, २० मार्च १६२६ को रंगापुर में अपने एक भाषण में सुभाष ने कहा था-"आज कल पश्चिम से समाजवाद के नये-नये विचार आ रहे है और वह हमारी दृष्टि में परिवर्तन ला रहे है. पर समाजवाद हमारे लिए कोई नया विचार नही है. हम नया समझते हैं क्योंकि हम ने इतिहास के सूत्र खो दिये है. निसंदेह बाहर के विचारों को लेकर अपने विचार भण्डार को भरना तो श्रेयष्कर है किन्तु अपनी सांस्कृतिक सम्पदा को ठुकरा देना गर्हित है." बस इसी पर नेताजी और कम्युनिस्टों के दो रास्ते हो जाते है. नेताजी इस बात में विश्वास में विश्वास करते थे कि समाजवादी गणतंत्र में सभी व्यक्तियों को आजादी का सर्वोच्च स्रोत देश का जन सामान्य होना चाहिए और किसी भी दल की तानाशाही नहीं होना चाहिए. इस बारे में उनका सिद्धात वाक्य था, भारत की जनता को सम्पूर्ण अधिकार. आजादी के आन्दोलन के दौरान जब तेजस्वी नारा 'ढिलन-सहगल -शाहनवाज, इंकलाब जिन्दाबाद', आकाश में गूंजता था तो देश भक्त मचल उठते थे. कर्नल गुरू बख्श सिंह की भेंटवार्ता १६८८ में छपी थी जिसमें उन्होनें प्रमोद भार्गव को बताया था कि आजाद हिन्द फौज का यह संघर्ष यहॉ तक आते-आते बहुत गहरा बसंती रंग ले आया था. सेनानियों ने लड़ते-लड़ते नेताजी का यह संदेष अंग्रेजों की आर्मी, एयरफोर्स और नेवी में कार्यरत भारतीय सिपाहियों तक पहुंचा दिया, "तुम गोली चलाते हो, अपने ही भाइयों पर, अपने ही देशवासियों पर? इसलिए की अंग्रेज तुम्हें गुलाम बनाये रक्खें, तुम पर शासन करें? शासन करें अंग्रेज और गोली खाओ तुम?" उन पर बेहद तल्ख प्रतिक्रिया हुई. वे अंग्रेजी बिल्ले, तमगे खीचकर पैरों तले रोंदते हुए बोल उठे, "नेताजी जय हिन्द! हम आ रहे है हमारी आखें खुल गई है. अब आप हमें जो चाहें आदेश दीजिए." इस अदभुत परिवर्तन से ब्रिटिश शासन समझ गया कि भारतीय सेना में अब उनके प्रति स्वामी भक्ति नहीं है अब ये लोग किसी भी कीमत पर अपने देशवासियों पर गोली नहीं चलायेंगें. अन्ततः अंग्रेजों ने सोचा, जब भारत पर शासन बनाये रखने का आधार ही अपना नहीं रहा तो अब शासन किस के बलबूते पर करेगें और अंत में विभाजन की क्रूर साजिश के साथ ब्रिटिश हुकूमरानों ने हिन्दुस्तान छोड़ने की तैयारी आरम्भ कर दी.

झांसी में चन्द्रशेखर आजाद की प्रतिमा के अनावरण समारोह में स्वाधीनता सेनानी संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं नेताजी के सहयोगी शीलभद्र याजी यहां आये थे. एक भेंट में उन्होंने बताया था कि फारवर्ड ब्लाक ही भूमिका के बारे में नेताजी ने लिखा था कि फारवर्ड ब्लाक एक मार्क्सवादी पार्टी बनाने तैयार करने व विकसित होने की बुनियाद तैयार करेगा. उनकी यह घोषणा सावित करती है कि वह सच्चे वैज्ञानिक समाजवादी थे. हरिपुरा कांग्रेस के अध यक्षीय भाषण में नेताजी ने कहा था, "मुझे इसमें कोई संदेह नही कि गरीबी के निवारण अशिक्षा, बीमारियों के मूलोच्छन, वैज्ञानिक विधि से उत्पादन तथा वितरण से सम्बन्धित हमारी मुख्य राश्ट्रीय समस्याओं का समाधान समाजवादी विधि से ही हो पाएगा." सच कहा जाए तो सुभाश तो उस दिन नहीं होंगे जिस दिन धरती नहीं होगी, आकाष नही होगा. कवि श्री कृष्ण सरल ने ठीक लिखा-आगे की पीढ़िया लिखेगी इतिहास वह आगे की पीढ़िया पढ़ेगी वे गाथाएं

वक्ष पर समय के
जो भारत के वीरों ने
बलिदानी भाशा में
लिख डाली खून से।
भारत का गाढ़ा
गर्म
लाल लहू गिरा जहां
ठौर-ठौर वे सब अब तीर्थधाम हो गए
मां के सपूत
मुक्ति-दूत
ओ सुभाष चंद्र
इस युग के लिए तुम अजेय राम हो गए।

आजादी के लिए नेताजी का जबर्दस्त खून खौला था. उनकी जो छवि हमारे हृदयों में अंकित है, उसे मिटा सकने की ताकत सर्व शक्तिमान काल में भी नहीं है. वे जीवन और मरण से परे तथा सच्चे अर्थो में अमरता के प्रतीक है. अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि है, जयहिन्द के जनक सुभाष को।

जन्मशती के अवसर पर प्रस्तुत आलेख

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबन्धकला : एक समीक्षा

डॉ. विद्याश्री, रीडर, हिन्दी विभाग, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर

आधुनिक गद्य के श्रेष्ठ निबन्धकारों में आचार्य हजारी प्रसाद जी का नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है. द्विवेदीजी का जन्म सन् १९०७ में हुआ था. उनकी जन्मशती को सभी हिन्दी प्रेमी सश्रद्धा पूर्वक मना रहे है. इस अवसर पर उनके निबन्ध साहित्य का पुर्नमूल्याकंन करना हमारा कर्तव्य है.

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी अद्यतन युग के निबन्धकारों में अग्रगण्य है. आचार्य शुक्ल ने हिन्दी-निबन्ध साहित्य की जिस स्तर पर, प्राण-प्रतिष्ठा की थी, वहीं से उसे भारतीय परम्परा और उन्मुक्त वातावरण के क्षेत्र में लाने का श्रेय आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी को ही है. वस्तुतः शुक्ल जी के परवर्ती निबन्धकारों में द्विवेदी जी ही हिन्दी के सर्वाधिक सफल निबन्धकार है.

निबन्ध साहित्य में विविधता की कसौटी मानें तो द्विवेदी जी हिन्दी में अप्रतिम है. विषय की विविधता की दृष्टि से उनके निबन्धों का विभाजन मुख्यतः इन शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा सकता है.

सांस्कृतिक संबंधी-'धर्मस्यतत्वं निहितं गुहायाम', 'भारतीय संस्कृति की देन', 'संस्कृतियों का संगम',

ज्योतिष संबंधी-'केतुदर्शन', ब्रहमाण्ड का विस्तार, भारतीय फलित ज्योतिष

नैतिक संबंधी-प्रायश्चित की घड़ी, आन्तरिक शुचिता की आवश्यकता है.

वृक्ष-ऋतु विषयक सम्बंधी-अशोक के फूल, वसन्त आ गयाा, आम फिर बौरा गये.

सिद्धात समीक्षात्मक- समालोचक की डाक, साहित्य का नया कदम, आलोचना का स्वतन्त्र मान, क्या आपने मेरी रचना पढ़ी है?, मनुष्य की सर्वोत्तम कृति साहित्य, आदि आपके निबन्धों की विविधिता के साक्षी है.

द्विवेदी जी ने साधारण से साधारण विषयों से लेकर गम्भीर और जटिल विषयों तक अपने गम्भीर चिन्तन, शास्त्रीय विवेचन और सनातन जीवन दर्शन का विस्तार किया है. उनके विषय निर्वाचन में उनकी भावात्मक अनुभूति हर मानसिक चेतना की गहरी सूझ-बूझ स्पष्ट परिलक्षित होती है. उनके निबन्धों के संग्रह 'विचार और वितर्क', 'अशोक के फूल', 'विचार प्रवाह', और 'कलपकता' नाम से प्रकाशित हुए है. इनमें उनके समय-समय पर दिये गये कुछ भाषण और पत्र भी संकलित है.

द्विवेदी जी के निबन्धों की विशेषता-

१.मानवतावादी दृष्टिकोण-मानवतावादी दृष्टिकोण मे उनकी चिन्तन का मूलमान विषय है-'मनुष्य'. साहित्य और सम्पूर्ण संस्कृति के क्षेत्र में उनके लिए मनुष्य ही सबसे बड़ा तत्व है. द्विवेदीजी की मानवतावादी सूक्ष्म दृष्टि इतनी व्यापक है कि तुच्छ-सी तुच्छ वस्तु में भी एक सामान्य सत्य निकाल लेती है. 'साहित्यकरों का दायित्व', 'आलोचना का स्वतंत्र माना', 'मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य', और 'बसन्त आ गया है' में उन्होंने इसको पूर्ण रुप से स्पष्ट कर दिया है.

हजारी प्रसाद जी की यह दृष्टि देशकाल की सीमा से परे है. सीमित दायरे में सोचना उन्हें नहीं भाता. उनकी दृष्टि विराट कल्पना के पंखों पर चढ़कर, अतीत की गहन गुफाओं में पैठकर एक ऐसी सत्यता का दर्शन करती है जो शावत है, अक्षुण्ण है, सर्वव्यापी है. द्विवेदी जी सामाजिक चेतना विद्रोह पर आधारित है, पर यह विद्रोह मानव मात्र का, उसके कल्याण का, विद्रोह है. 'इतिहास देवता' ही जिसके निर्णायक है. वे दुर्बल राजनीतिक क्रांति न चाह कर स्वस्थ सामाजिक क्रांति लाने के पक्षपाती है. वे युग की आवश्यकता के अनुरुप क्रांति लाने के लिए अतीत की परम्परा से वर्तमान का सम्बन्ध विच्छेद नहीं होने देना चाहते और न यही स्वीकार करते हैं कि विभिन्न राष्ट्रों और जातियों की अपनी व्यक्तिगत विशेषताएँ कभी नष्ट हो जायेगी और वे सब मिलकर एक स्वरुप हो जायेगें. द्विवेदीजी का दृष्टिकोण ऐतिहासिक, वैज्ञानिक एवं समाज सापेक्ष है. वे पूर्ववर्ती विचारकों की तरह इतिहास को बीता हुआ न मानकर उसे एक जीवन्त शक्ति मानते है. उनका मत है कि मनुष्य ही इतिहास को नहीं बनाता अपितु इतिहास भी मनुष्य का निर्माण करता है. दोनों एक दूसरे के पूरक है.

२.प्रगतिशीलता-अपने निबन्धों में आचार्य द्विवेदी ने यह स्पष्ट किया है कि आदिकाल से ही मनुष्य का जीवन विविध विघ्न वाधाओं के कारण रुकता-अटकता आया है किन्तु उसके आत्म विश्वास और अधिकार-चेतना की संजीवनी शक्ति ने उसे प्रगतिशील बनाया है. प्रगतिशील से उनका अभिप्राय मार्क्सवादी परम्परा के भौतिकवदी विकास से नहीं है वरन् जीवन की भेदभाव रहित तथा 'सर्वभूतहितरेत' उन भावनाओं से है जो मनुष्य की दुर्गति-हीनता और गुलामी बनाये रखने की दुर्दान्त प्रवृत्ति को त्याग कर मनुष्य

को सत्यनिष्ठ बलिदानी और त्यागी बनाने को प्रेरित करती है.

द्विवेदीजी पुरातन काल की सड़ी गली परम्परा को ढोने वाली जाति-प्रथा का मनुष्य जाति की घोर विडम्बना समझते है, उसे कलंक स्वरुप मानते हैं. 'अशोक के फूल' में स्थल-स्थल पर इस प्रकार की जाति-विरोधी भावनाओं की झांकी मिलती है. बिना किसी हिचकिचाहट के खरी से खरी दो टूक बात करना द्विवेदी जी के साहसी व्यक्तित्व का परिचायक है.

'कलपलता' में संगृहीत 'ठाकुर जी की बटोर' नामक निबन्ध में भी द्विवेदी जी ने धर्म के ठेकेदारों एवं दिमाग के दुश्मन पौराणिक पन्थियों की अच्छी छीछालेदर की है. द्विवेदी जी की यह चिंतना रुढिवादी न होकर सतत गतिशील है. उनकी दृष्टि शुद्ध आत्म परक है. 'घर जोड़ने की माया' नामक निबन्ध में भी उन्होंने व्यर्थ के जंजालों, ढोंगो-पाखंडो एवं बाहाचारों की अच्छी खबर ली है. इस दृष्टि से उनकी उपनिषद् कालीन साधनासिक्त ज्ञानाश्रयी प्रज्ञा का अच्छा परिचय मिलता है.

३. सांस्कृतिक समन्वयः-द्विवेदी जी के निबन्धों में भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठा की भावना है. यह भावना पूर्ण निष्पक्ष एवं विश्वसनीय मानवीय भावनाओं से परिचालित है. भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हुए भी वे उससे ऊपर उठे है. उनका दृष्टिकोण अखिल मानवीय है. द्विवेदीजी का एक ऐसी सामान्य संस्कृति में विश्वास है किसी देश या जाति विशेष की बपैाती नहीं है वरन् संपूर्ण संसार को एक सूत्र में बांधनेवाली है. संस्कृति द्वारा वह अविरोध धर्म की ही बात करते है. वह तो एक अखण्ड तत्व है जिसका साक्षात्कार भिन्न-भिन्न देशों और जातियों ने विभिन्न परिस्थितियों में रहकर खण्ड रुप में किया है.

आचार्य द्विवेदी के विचार से भारतीय संस्कृति की आंतरिक दृष्टि मानव मूल्यों के उत्थान, आन्तरिक शुद्धि, पशुसुलभ क्षुद्र स्वार्थो का त्याग, संयम, वैराग्य और अनासक्ति की भावना की ओर प्रमुख रुप से रही है. उन्होंने आधुनिक विज्ञान, मनोविज्ञान, पुरातत्व और नृतत्वशास्त्र आदि के आधार पर हिन्दू संस्कृति की विशालता की ओर संकेत करते हुए कहा है कि 'पुराने आधारों से चिपकने से कोई लाभ नही है. अपने चरित्र को ऊँचा उठाकर हमें सामूहिक रुप से उन्नति का प्रयत्न करना चाहिए.'

द्विवेदीजी ने भारतीय संस्कृति की समन्वय भावना में जातियों, धर्मो, संप्रदायों, आस्थाओं और विश्वासों के विलीनीकरण तथा उसे अधिकाधिक पुष्ट करने की भावना की ओर संकेत किया है. निश्चय ही उन पर रवीन्द्रनाथ के चिन्तन की गहरी छाप है. रवीन्द्रनाथ, कालिदास, कबीर, सूर और तुलसी आदि कवियों के व्यक्तित्व से प्रेरणा ग्रहण करते हुए भी उनके विचार सर्वत्र मौलिकता से अनुस्यूत है. मानव कल्याण की भावना से प्रेरित होकर वे स्वदेश-प्रेम, समाज-प्रेम, प्रकृति-प्रेम तथा शुद्धाचरण की उदत्त भावनाओं को तप, संयम, सेवा, परोपकार आदि से परिपुष्ट करते है.

द्विवेदीजी सांस्कृतिक दृष्टि से साहित्य को भी देखने के पक्ष में है. वे राजनीति, अर्थनीति एवं नवनिर्माण की योजनाओं को उदार, संवेदनशील, उपयोगी तथा व्यावहारिक साहित्य के माध्यम से कल्याणकारी बनाना चाहते है. वे ऐसे स्वस्थ साहित्य के सृजन के इच्छुक हैं जो मनुष्य को मनुष्य के सुख दुःख के प्रति संवेदनशील बनाता हो. वह केवल वाग्जाल न होकर समूची मानवता के सच्चे अर्थों में उन्नायक हो. 'साहित्यकारों का दायित्व' में आप साहित्य के सदुद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि 'पोथियों का संख्या बढ़ाना या ज्ञान की दूकान चलाना साहित्य का लक्ष्य नही है. मनुष्य को अज्ञान, मोह और कुसंस्कार से बचाना ही ही साहित्य का वास्तविक लक्ष्य है.

४.आत्मदृढ़ता-द्विवेदी जी के कथन में दृढ़ आत्म-विश्वास समाया रहता है. कोई भी ऐसी ढुलमुल और संदिग्ध ा बात उन्हें दुहराना नहीं भाता. सुसंस्कारों से संशोधित व्यक्तित्व से ऐसी सटीक और ठोस बात निकलती है. जिसे बुद्धि आनाकानी करने का रास्ता नहीं खोज पाती. उनके सारे कथन वैज्ञानिक तर्को की दृढ़ भित्ति पर टिके होते हैं. उनकी आत्मानुभूति, उनकी जीवनदर्शिनी सूक्ष्म दृष्टि एवं दूरदर्शिता सभी में एक ऐसी जाज्वलयमान साधना समायी हुई है कि मन शीघ्र ही स्वीकार करने को विवश हो जाता है. 'अशोक के फूल' में संगृहीत निबन्धों में यत्र तत्र सर्वत्र ऐसे आत्मदृढ़ता जनित बातें देखने को मिलती है.

५.बुद्धि और हृदय का संयोग-आचार्य द्विवेदी ने निबंधो में जहॉ हृदय-पक्ष प्रबल है वहॉ बुद्धि का संयोग उसे रत्न-जटित आभूषण की भॉति सुन्दर और अमूल्य बना देता है. आम के बौर, शिरीष, कुटज और अशोक के फूल देखकर उनके मन में जो विचार प्रवाह होता है उसे कभी वे लोक परम्परा प्राप्त प्रवाद से सम्बन्धित करते है, सभ्यता और संस्कृति के विकास तंतुओं से सम्बद्ध करके धर्म और साहित्य शास्त्र का विश्लेषण करते है.

कठोरता और कसावट की जकड़ से बचकर जहॉ कहीं उनके भाव-सीकर छलक सके है वहॉ उनमें सर्वत्र वह तरलता और रसमयता नहीं आ सकी है जो आचार्य द्विवेदी के निबंधो में स्वच्छन्दता से दिखाई देती है. उनके

वैचारिक दृष्टिकोण में उदारता भी है. वे अपने अतीत से चिपकने के पक्ष में नहीं है, नवीन में जो कुछ ग्राहय और उपयोगी है उसे स्वीकारने का भी उनका आग्रह सदैव रहता है. इस प्रकार उनके निबन्धों में बुद्धि और हृदय का सहअस्तित्व सामंजस्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत हुआ है.

६.विषय-विविधता-आचार्य द्विवेदी ने भारतीय संस्कृति, इतिहास, भाषा, साहित्य, कला, शिक्षा, राजनीति, शोध, समाज-सुधार, रवीन्द्र और गांधी-भक्ति तथा ज्योतिष आदि के माध्यम से अपने दृष्टिकोण की व्यापकता तथा अध्ययन-क्षेत्र की विविधता का प्रदर्शन किया है. विभिन्न निबन्धों के लिए उन्होंने अलग-अलग प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है.

७-हास्य-व्यंग्य-विनोद-आचार्य द्विवेदी के वैचारिक एवं पाण्डित्यपूर्ण निबंधो में व्यंग्य-विनोद के छीटें पाठक को गुदगुटाते रहते है. 'क्या आपने मेरी रचना पढ़ी है?' स्वतंत्र रुप से हास्य-प्रधान रचना है. 'महात्मा के प्रयाण के बाद' शीर्षक निबन्ध में उन्होंने कथनी और करनी में भेद करने वालों पर व्यंग्य किया है. 'साहित्य का मर्म' में उन राष्ट्रनेताओं पर व्यंग्य है जो अपनी सभ्यता और संस्कृति को भूलकर अंग्रेजी के मानस पुत्र है और उसके अभाव में अनेक प्रकार की कठिनाइयों की कल्पना मात्र से विहवल-व्याकुल होते है. कहीं-कहीं मुहावरों और सूक्तियों के द्वारा उनके व्यंग्य बहुत ही तीखे परन्तु भावपूर्ण प्रतीत होते है-'स्वर्गीय वस्तुएँ धरती से मिले बिना मनोहर होती.'

वस्तुतः उनके निबन्धों में विषय-विवेचन प्रमुख और व्यंग्य गौण है फिर भी यह व्यंग्य इतनी सशक्त विधि से कहा गया है कि विवेच्य विषय को बड़ी सरलता से स्पष्ट कर देता है.

भाषा-शैली-द्विवेदजी की भाषा में संस्कृत के तत्सम तथा समासबाहुल शब्द पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं फिर भी उनकी भाषा को हम 'सहज भाषा' कह सकते है क्योंकि उसका भावानुसार प्रयोग हुआ है. इसी कारण उसमें अंग्रेजी, फारसी, अरबी आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग भी बड़ी स्वाभाविकता से हुआ है. यहीं नहीं, उन्होंने लोक प्रचलित शब्दों एवं मुहावरों का भी बिना हिचक के प्रयोग किया है.

आपकी शैली में प्रसाद गुण सर्वत्र है. आपके निबन्धों में सूचित-वाक्य बिखरे पड़े है जो स्वतन्त्र रुप से ज्ञानवर्द्धन करने वाले हैं.

निष्कर्ष-सारांशतः आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सनातन जीवन-दर्शन, प्राचीन ज्ञान और साहित्य सिद्धात को नवीन अनुभवों से मिलाकर निबन्ध रचना की. आपके सभी निबन्ध गहन अध यन के विस्तृत पट पर बने वर्तमान जागरण के मनोहर चित्र है. रंग पुराने हैं, चमक नवीन, प्राण प्राचीन है, गति आधुनिक, आस्थाएँ श्रद्धा प्रेरित है; उनको जीवन का स्वरुप देनेवाले कर्म विज्ञान-सम्मत. साधारण और सामान्यतम विषय पर लिखे गये निबन्ध ा में भी आपका प्राणवान पाण्डित्यय और सूक्ष्म चिन्तन मधुर-मुग्ध शैली में बोलता है. सभी सीमा-क्षेत्रों में निबन्ध ा के विषयों का चुनाव, प्रकार और शैली की अनेक रुपता, संस्कृति-समन्वय, मानव के प्रति अकम्पित आस्था और ज्योतिर्मय भविष्य की आशा, आपको हिन्दी निबन्धकरों में गौरवपूर्ण स्थान दिलाती है.

गोयनका श्रीमती सुनीता देवी

सुनीता जी का जन्म ८ अगस्त १६५५ को मुंबई में हुआ. उनके पिता का नाम श्री सोहनलालजी सरावजी और माता का नाम श्रीमती गीतादेवी है. १८ जनवरी १६७५ को उनका विवाह श्री अरुण कुमार जी गोयनका के साथ हुआ. एक कुशल गृहिणि होने के साथ-साथ, सुनीताजी अपने पति के कारोबार का लेखा-विभाग भी सम्हालती है. वे इनरहवील क्लब, इंचलकरंजी की संस्थापक अध्यक्षा भी है तथा गोयनका फाउन्डेशन की भी ट्रस्टी है.

उन्हें इस वर्ष भारत सरकार की ओर से, पॉच वर्षो तक लगातार उच्च आयकर भरने के कारण, प्रामाणिक आयकरदाता के रुप में राष्ट्रीय सम्मान प्रदान किया गया है.

++++++++++++++++++++++

साहित्यकारों/सदस्यों के लिए

१.पत्रिका के लिए लेख अथवा प्रकाशन सामग्री कागज के एक ओर बायी तरफ पर्याप्त हाशिया छोड़कर स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखकर अथवा टाईप कराकर दो पंक्तियों के बीच में समुचित स्थान के साथ भेजे़ं. किसी भी उद्धरण का पूरा सन्दर्भ अवश्य दें. रचना की वापसी के लिए टिकट लगा लिफाफा भेजना न भूलें. २. किसी पर्व/अवसर विशेष पर सामग्री दो माह पूर्व भेजें. ५. यदि आप अपनी कृति (काव्य, ग़ज़ल, कहानी, निबंध संग्रह, उपन्यास) का विज्ञापन इस पत्रिका में छपवाना चाहते हैं तो रु० १००/-का मनिआर्डर तथा एक प्रति पुस्तक की भेजें. ६. धनादेश 'संपादक, विश्व स्नेह समाज' के नाम से भेजें. चेक स्वीकार्य नहीं होगा. सदस्यों को चाहिए कि अपना डाक पता स्पष्ट सुन्दर अक्षरों में लिखें.

आत्म हत्या क्यों?

बृजकिशोर दुबे, भोपाल

भारत में आत्म हत्यारों की संख्या पच्चीस हजार प्रतिवर्ष पहुँच चुकी है. आत्महत्या करने वालों मे अत्याधिक संख्या युवक-युवतियों की है.

प्रश्न उठता है कि किसी व्यक्ति के मन में आत्महत्या जैसा जघन्य अपराधा और गहन पाप करने का विचार उठता ही क्यों है? क्या इसलिये कि उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, व्यापार में भारी क्षति हुई है, उसको कोई नौकरी नहीं मिल रही है, कर्ज के कारण उसके स्वाभिमान को ठेस पहुची है, अथवा उसको अपना मनचाहा साथी नहीं मिल रहा है.

सृष्टि रचना के साथ ही मानव जीवन में प्रकृति अपना रुप दिखलाती आ रही है. प्रत्येक के जीवन में कभी जय कभी पराजय, कभी शान्ति तो कभी क्रान्ति, कभी उत्थान कभी पतन, कभी लाभ कभी हानी होती रहती है. कभी-कभी सुख साधनों का सुख, तो कभी अभावों की गहन-पीड़ा, कभी अपनों की मुस्कान, और कभी अपनो से ही घृणा देखने को मिल सकती है. उसका यह अर्थ तो नहीं, कि वह इस प्रकार के उतार-चढ़ाव और आशा निराशा से अपने को निष्क्रिय और भाग्यहीन मानकर अपना साहस खो बैठे.

जीवन में अनेकानेक संकट आते है और चले जाते है. कुछ ऐसे ही संकट आ सकते है, जिनसे बचने का आपको कोई उपाय नहीं सूझता. एक गहन निराशा से आपको अपने चारो ओर अंधेरा ही अंधेरा दिखलाई देने लगता है. याद रखिये-समय बड़ा बलवान होता है. समय बीतने पर सभी विपत्तियॉ अपने आप ही समाप्त हो जाती है.

भारत में ऐसे कमजोर और निराशावादी व्यक्तियों की कमी नहीं है, जो अपने दुखो की पीड़ा और बिगड़ती आर्थिक परिस्थितियों से विचलित होकर अपना मानसिंक सन्तुलन खो बैठते है. वह यह जानते हुए कि आत्म-हत्या करना एक गहन पाप और जघन्य अपराध है, आत्म हत्या कर बैठते है, अथवा आत्महत्या करने का प्रयास करते है. कुछ सोसाइड नोट-मृत्यु पूर्व का अन्तिम पत्र पढ़ने और सुनने को मिले है, जिसमें असफल प्रेम सम्बन्ध, परीक्षा में असफलता, पारिवारिक कलह, किसी लम्बी बीमारी से पीड़ित होने, अथवा किसी गहन मानसिक आघात आदि कारणों से आत्म हत्या करना बतलाया जाता रहा है.

कारण कुछ भी रहा हो! किन्तु यह दुष्कृत्य केवल अपनी उत्तेजना, क्रोध आदि पाश्विक विकारों के कारणों से ही किया गया है; जिसका दुष्परिणाम उसके परिवार को भुगतना होता है.

आपका परिवार आपका सहारा चाहता है. वह आपसे अनेक आशायें लगाये रहता है. वह आपके सुन्दर भविष्य हेतु भी अनेक योजनाएं बनाता और संजोता है. ऐसे में जरा सी उत्तेजना और क्रोध में आकर आत्म हत्या करना कहॉ का न्याय है? ईश्वर प्रदान मानव शरीर को समय से पूर्व नष्ट करने का आपको कोई अधिकार नहीं है.

यह मानव शरीर ईश्वर की देन है. इसमें परमात्मा का अंश बसता है. जिसकी रक्षा करना, जिसको सुरक्षित रखना आपका सच्चा कर्म, आपका धर्म और सच्चा पुरुषार्थ है. मनुष्य की योग्यता तो इस बात में है कि वह सौ वर्ष तक स्वस्थ जीवन, बलवान, क्रियाशील, कर्तव्य-परायण, ईमानदार और परिश्रमी बन कर ईश्वर द्वारा प्रदाय, सर्वोच्च आनंद को प्राप्त करें एवं अपने परिवार, सभी दुखी पीड़ित व्यक्तियों के दुखों का निवारण करने में जुट जावें. उसी में जीवन का सच्चा सुख है.

माना कि कुछ समय के लिए आकांक्षाओं के पूर्ण न होने पर आप नाना प्रकार की कल्पनाओं में लीन हो जाते है. यह कल्पनायें अच्छी भी हो सकती है और बुरी भी. ऐसे अवसर पर आप अपना साहस न खोवे, बल्कि शान्त चित्त से अपनी वर्तमान परिस्थितियों पर चिन्तन कर उससे परिचित होने का प्रयास करें, तो निश्चय ही आप अपना भाग्य पलट सकते है. इसके विपरीत यदि आप कुकल्पना के आधार पर गल्त दिशा की ओर मुड़ गये, तो निश्चय ही आप अपना दुर्लभ जीवन नष्ट कर बैठेगे.

ईश्वर ने मानव जीव को उसके जन्म से सदबुद्धि प्रदान की है, जिससे आपको अपने बल का ज्ञान होता है. निबुद्धि में बल कहॉ? वह तो सर्दव निर्बल बना रहता है.

अतः आप ईश्वर प्रदाय विद्या, बुद्धि और विवेक का सदुपयोग कर अत्याधिक क्रोध, चिन्ता, ईर्ष्या, भय और शौक को त्याग कर प्रसन्न रहे. श्री गीता में भी कहा गया है-'प्रसन्नचित रहने से सब दुख दूर हो जाते है, तथा सद्‌बुद्धि स्थिर रहती है.' यदि इस उपदेश का पालन कर लिया तो आप स्वयम् देखेगें कि अच्छा समय आपको ढूंढता हुआ स्वयृम आपके पास आयेगा. जिसका मार्ग सच्चा है, उसे कोई भी नहीं हरा सकता.

मैं भी ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि 'हे ईश्वर! सभी अविकसित, अविवेकी और अज्ञानियों को क्षमा करें.'

नव वर्ष २००८ की सभी पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएं

कहानी

जादूगर कल्लू जी

✍जी.सी. भट्टाचार्य, वाराणसी

बात उन दिनों की है जब बनारस शहर में गौदौलिया से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के डे हास्टल तक सरकारी बसे चला करती थी और किराया पचास पैसे हुआ करती थी. एकबार मुझे कल्लूजी के साथ काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विश्वनाथजी के मन्दिर जाना था दर्शन-पूजन के लिए. सो बस में जा बैठे हम. बगल के सीट में एक दाढ़ीवाले सज्जन बैठे हुए थे. बच्चों का एक समूह कहीं शायद पिकनिक वगैरह मनाने के लिए चल रहे थे हमारे साथ. अचानक वह सज्जन बोल पड़े-"जनाब, घड़ी में टाइम क्या हो रहा है." कल्लूजी कुछ भॉपकर धीरे से बोले-"बारह बज गए, जनाब." उत्तर मिला-"शुक्रिया." दो मिनट के बाद वे पुनः मुखर हुए-"पता नहीं कब यह बस चलेगी. समय बीत ही नहीं रहा है. आप जादू के खेल देखना पसन्द करेंगे क्या, जनाब." अबकी बार मैंने पूछ ही लिया-"आप जादूगर है, क्या." वे कुछ झिझकते हुए बोले-"हें हें हें....यही थोड़ा बहुत.... दरअसल बात यह है कि यह बस का सफर होता ही है बड़ा उबाउपन लिए और क्या...." कल्लूजी मौन थे. परिचालक ने सीटी दे दी. वे सज्जन बोले-"तो फिर यह.... यह देखिए....यह आपके मित्र के कुर्ते पर बैठी हुई इस मक्खी को मैंने.... यूं पकड़ लिया.... फिर... चल जादू मेरी छू मन्तरवाली.... हॉ, तो यह देखिए जनाब, है एक गुलाब का फूल अब मेरे हाथ में..... यह लीजिए जनाब, एकदम ताजा फूल है." मैं तो एकदम से अवाक्. कल्लूजी शान्त ही थे. इतने में बस गर्जन के साथ चल दी. वे बोले-"आप अचम्भे में न पड़े, यह तो कुछ भी नहीं है.... यह एक नमूना और देखिए आप. आपके मित्र के चरण से यह खाकसार जरा यह उठाया खाक...क्या कहते है आप लोग...? धूल." कहकर कल्लूजी के पैरों पर वे एक जोरदार थप्पड़ मारे धूल लेने के बहाने और फिर बोले-"चल मेरी जादू छूमन्तरवाली.... यह.... हॉ, देखिए यह क्या आ गया है मेरे हाथ में. तब तक कई बच्चे जादू देखने की लालच में हमारे पास आकर हमें घेरकर खड़े हो चुके थे. वे चिल्लाए-"चाकलेट, चाचा." वे मुस्कराते हुए बोले-"तो तुम जरा इसे चखकर देखो और बताओ कि सही में यह चाकलेट ही है या और कुछ." बच्चे तुरन्त टेस्ट करने के लिए तैयार हो गए और फिर बोले-"एकदम से असली चॉकलेट है, चाचा." फिर तो उनकी धाक जम गई. बस के मदनपुरा पार करते करते वे कल्लूजी को जमकर जहॉ चाहे थपड़ियाते हुए दिखाने लग गए थे. कभी माचिस की तीली तो कभी छोटी सी मोमबत्ती का टुकड़ा....निकलना चालू था जैसे कल्लूजी न हुए कोई भानुमती का पिटारा हो गए. तालियों पर तालियॉ बज रही थी और हम भदैनी की ओर बढ़ रहे थे. गनीमत यह थी कि उन दिनों बस में भयंकर भीड़ नही हुआ करती थी. दोचार लोग जरूर चढ़-उतर रहे थे. बच्चे बहुत खुश थे और बड़े भी मजा लिए जा रहे थे. मुफ्त में जादू के खेल का. कल्लूजी मना किए जा रहे थे लेकिन सुनता ही कौन था उनकी बातें वहा. कल्लूजी मेरे पास सरकते हुए बोले-"अरे पण्डितजी, बगुले की तरह मुँह बाए मजा देख क्या रहे हो, मेरी तो दुर्गति कर दी इस कठमुल्ले की औलाद ने पीट पीटकर. कुछ तो करो...." मैंने कहा-"मुझे तो जादू आती नहीं है, कल्लूजी, करूँ तो क्या." वे बोले-"अब जादू क्या कोई सीखने की चीज होती है रे, पण्डितजी. आप अच्छा, तुमसे नहीं होगा. लाओ, जेब में दस-बारह जो सिक्के पड़े हो, धीरे से मुझे थमा दो. फिर मैं ही कुछ... अरे, बाप रे....." कहकर बीच में ही

क्या करोगे तुम

टूट जाए मन के सपने
दिल कहीं पाए न रमने
जब निराशा बादलों सी
मन की कोरों में समाए
और हताशा रोक दे तेरे कदम
क्या करोगे तुम।
पूरब दिशा में उग रहा रवि
लालिमा बिखरी चतुर्दिक
पक्षियों के कलखों से
हो उठे गुंजित भवन
फिर भी न हो पुलकित अगर मन
क्या करोगे तुम।
उच्चाधिकारी भ्रष्ट होवें
राजनेता कुर्सी न छोड़े
धनिक अति धन के प्रलोभन
बिगाड़े संतुलन
बुद्धिजीवी जब कुतर्कों से
बढ़ाए मसखरापन
क्या करोगे तुम।
अब तो सोचों और समझो
मन को तुम यूं कुछ तो कसलो
यह धरा है सब की जननी
संपदा है सबकी अपनी
मत बिगाड़ो यह व्यवस्था
विश्व के सब जन हैं अपने
फिर लगे तुम क्यों झगड़ने
बात यदि तुमको न भाए
क्या करोगे तुम

o **शिवनारायण**, कानपुर, उ.प्र.

कल्लूजी चींख पडे. तो मैं क्या बात है, देखने लगा. पता चला कि वे सज्जन अचानक कल्लूजी के फुले गाल पर अभी-अभी कसकर एक चॉटा जड़कर एक डॉटपेन निकाल चुके है. उन दिनों डॉटपेन की बहुत धूम मची थी. नई-नई चल निकली थी. बच्चे जमकर तालियॉ पीटते हुए उसे लेने के लिए-"चाचा, मुझे दो" कहकर शोर मचाने लगे थे. मुझे लगा कि बस लंका पार कर चुकी है. जब वातावरण कुछ शान्त हुआ तो कल्लूजी दॉत निपोरकर बोले-"बहुत बढ़िया खेल है. अब आपकी इजाजत हो तो जाने से पहले मैं भी जरा एकाध ा तमाशा दिखाए जाना चाहता हूँ, बच्चों, तो यह देखो....." और बिना उनकी अनुमति लिए ही खेल शुरु कर दिए. कल्लूजी बोले-"देखो, बच्चों, यह मेरा हाथ एकदम से खाली है. अब मैंने इनके कुर्ते की एक जेब को जरा यूँ पकड़ लिया. ठीक है. अब बस, जरा जोर से खींचना ही तो है. और, यह ...यह खींचा, जय श्रीरामजी कहकर.. और यह दे पटका फर्श पर. तभी "ठन्नन" की एक आवाज सुनाई दी और कल्लूजी बोले-देखो तो बच्चों, क्या निकला है." बच्चे चिल्लाने लगे-"दस पैसे का सिक्का, अंकल" कल्लूजी कुछ दुःखित हुए और बोले-"बस, टुकड़ा छोटा सा फटा था इसलिए. बहुत आसान खेल है, बच्चों. हॉ, कुछ बड़ा टुकड़ा पकड़ना जरूरी होता है, बड़ें सिक्के पाना हो तो. देखो, मैंने उनकी दूसरी बड़ी वाली जेब पकड़कर...हॉ, जोर से खींचना ही तो है, जय श्रीरामजी कहकर और यह पटका...." फिर से "ठन्नन" हुआ. बच्चे चीखे-"सीधे चवन्नी निकला है अंकल." वे उदार होकर बोले-"ले लो बेटा, तुम ही रख लो, मेरा क्या. जादू की चीजें तो ऊपरवाले की कृपा से निकलती है." मैंने मन में कहा-"मेरे पैसों को लुटाते हुए ऊपरवाले की बड़ाई करना अभी बन्द किए देता हूँ. " लेकिन कुछ कहने के पहले ही वे सज्जन बोल पड़े-"अरे, आप भी जादूगर है क्या. फिर तो मुझे पहले बताना चाहिए था न. आप पर फिर मैं कभी जादू दिखाता ही क्यों. तौबा... तौबा... बड़ी गलती हो गई मुझसे, माफी चाहता हूँ." लेकिन कल्लूजी महिला महाविद्यालय क्रांसिग पार करती हुई बस की ओर देखते हुए बोले-"तो आओ बच्चों, फिर से कोशिश हो जाय." बच्चे तालियॉ बजाकर चिल्लाने लगे-"अभी अंकल....." कल्लूजी बोले-"हॉ, तो अबकी मैंने...." दूसरे ही क्षण वे सज्जन चींख पड़े-"अरे, अरे जनाब, यह आप क्या कर रहे है, अरे मेरी लूंगी तो छोड़िए....इया अल्लाह." लेकिन कल्लूजी बिना अल्लाह मियॉ की परवाह किए जर्बदस्ती उनकी लूंगी में से एक बड़ा सा टुकड़ा फाड़ ही लिए खींच कर और जमीन पर दे पटके जय श्रीरामजी कहकर. तुरन्त एक "ठन्नन" हुआ और तालियॉ बजाते हुए बच्चे चीख पड़े-"एक रुपये का सिक्का, अंकल." महाउदारवादी कल्लू जी बोले-"ले लो बेटा, चाकलेट खा लेना. मेरा क्या. मैं ठहरा सन्त महात्मा आदमी. पैसों से मुझे क्या लेना-देना. लेकिन मन्त्र याद रखना और यह भ‍ि कि कपड़े का टुकड़ा जितना बड़ा होगा, सिक्का भी उतना ही वजनदार होगा. यह देखो....." सुनते ही वे सज्जन चीख पड़े-"अरे, नहीं और नहीं जनाब. दुहाई अल्लाह की..." लेकिन कल्लूजी बोले-"फिर आपकी यह टोपी से ही मैं काम चलाता हूँ, अभी बस आर्टस कॉलेज पहुँच ही रही है... मन्दिर के आने तक....यह.... यह पटका और ..." "ठन्नन"देखो, तो बेटा, क्या. पॉच का सिक्का..... ले लो बेटा..... अरे कन्डक्टर साहब, जरा रोककर.... मुझे यही पर उतर लेना चाहिए.... एक स्टॉपेज तो मैं पैदल ही चला जाऊंगा लेकिन.... बच्चों को भी जरा अवसर मिलना ही चाहिए. जादूगरी सीखने के लिए... तो शुरु हो जाओ, बच्चों.... और फिर मेरी ओर क्रोध से देखते हुए बोले-"अब काहे बैठे हो काठ के उल्लू की तरह वहॉ सीट पर. झट से उठो, और उतर चलो बस से... नहीं तो खैर नहीं.." कहते हुए कल्लूजी उठे और चलती हुई बस से ही कूद गए नीचे.

आया मौसम सखी सुहाना

घुमड़ घुमड़ नभ मे मेघा छाये
अमृत की बरसात करें
शीतल मंद हवायें अंग अंग
मस्ती की सौगात भरें
तपन मिटाये, तन मन की सखी
रिमझिम पड़त फुहारों से
आया मौसम सखी सुहाना
मीठी मीठी बात करें
भरे कूप, सर, सरिता, झरने
फूटे शिखर पहारों से
पनघट मग पायल छनकायें
आओ सखी शुरूआत करें
अंखियन कजरा माथे बिंदिया
रच ले मेंहदी हाथों में
साजन की नजरों में सखी री
प्यार मधुर संजात करें
अमरैया में झूले पड़ गये
सुषमा चहुंदिशि छाई है
गायें गीत मलार सखी मिल
खुशियॉ अपने गात भरें
सुबह सुहानाी बनी सखी री
शाम बना लें रंगीली
साजन की गोदी में अपनी
मदमाती हम रात करें

ठाकुरदास कुल्हारा, जबलपुर,म.प्र.

विद्रोही स्वभाव, विलक्षण प्रतिभा

✍अखिलेश वाजपेयी

१९६४-६५ की बात है राजमाता विजयाराजे सिंधिया कहीं जा रही थी. रास्तें में उन्हें एक जगह पेड़ के नीचे पांच छह साल की बच्ची प्रवचन देते दिखी. धर्म-कर्म और साधु संतो में आस्था होने के कारण राजमाता का काफिला रुक गया तथा कुछ ही क्षण बाद मध्य प्रदेश की राजमाता इस विलक्षण प्रतिभा वाली बिटिया के पैरों में माथा टेके साष्टांग दंडवत कर रही थी. इसके बाद तो जैसे राजमाता इस छोटी बच्ची की शिष्या हो गई. यह बच्ची दूसरी कोई नहीं आज की हिंदुत्व की प्रखर पैरोकार उमा भारती थी. ईश्वर ने शायद टीकमगढ़ के छोटे गांव की इस छोटी सी बिटिया के भीतर गीता, रामायण और महाभारत पर प्रवचन देने की क्षमता इसलिए भरी थी ताकि वह अपने निर्धन परिवार का पेट पाल सके. परिवार की रोटी का जुगाड़ उमा की मां जंगल से बीन कर लाई गई लकड़ियां बेचकर करती थी. छह भाई बहनों में सबसे छोटी उमा के घर में जब रोटी का ही इंतजाम नहीं था तो पढ़ाई लिखाई बात करना बेइमानी होगी. शायद इसीलिए उमा को पांच छह साल की उम्र में रामायण, गीता और महाभारत पर प्रवचन तथा सत्संग की प्राकृतिक क्षमता मिली. उमा अपनी इसी प्रतिभा के सहारे परिवार का बोझ अपने मासूम कंधो पर उठाने लगी. राजमाता हिंदू संगठनो में खासा प्रभाव रखती थी. राजमाता के साथ के कारण १९५९ में जन्मी उमा उम्र बढ़ने के साथ हिंदू खेमे की प्रखर प्रवक्ता के रुप में जानी जाने लगी. कुछ ही दिनों में उमा मध्य प्रदेश में विहिप की प्रमुख नेता बन गई. राजमाता ने उमा को राजनीति में हिदुत्व का प्रतिनिधित्व करने की प्रेरणा देनी शुरु की, लेकिन साध्वी राजनीति में जाने को तैयार नहीं हुई. राजमाता के निरंतर आग्रह पर वह १९८४ में खजुराहो से भाजपा के टिकट पर लोकसभा का चुनाव लड़ी. इंदिरा लहर के बावजूद वह मात्र २० हजार वोटो से हारी. १९८९ में हुए अगले चुनाव में ही वह खजुराहों से सांसद चुन ली गई. तब से अब तक उमां पांच बार सांसद रह चुकी है. भले ही उमा पिता के वामपंथी विचारों के विपरित हिंदुत्व के रास्ते पर चली, लेकिन पिता से विरासत में मिले उनके विद्रोही तेवर आज भी बरकरार है. चोट अगर सम्मान और स्वाभिमान पर हो तो फिर आग उगलने में भी देरी नहीं. यही वजह उनके भाजपा से अलग होने का कारण बनी. कानूनी विवाद में फंसने के बाद उन्होंने मध्य प्रदेश की मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दिया था. लेकिन जब पार्टी अपने वादे से फिरने लगी तो वह विरोधी हो गई. इसी कारण अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी को अपनी इस दुलारी बिटिया के तीखे हमलों का सामना करना पड़ा. इसके बाद वह पार्टी से अलग होकर राम रोटी यात्रा पर अयोध्या निकल पड़ी और भारतीय जनशक्ति पार्टी का गठन किया. किसे पता था कि टीकमगढ़ में जन्मी यह लड़की हिदुत्व की फायर ब्रांड नेता जाएगी. जिस बिटिया ने स्कूल नहीं देखा उसे हिंदी, अंगरेजी और संस्कृत में धाराप्रवाह प्रवचन देती है.

चोरी–लूटेरे जाऐंगे दिल्ली

आया समय अनोखा भैया
बना भेड़िया नेता।
निरीह प्राणियों के समक्ष
क्या खूब है भाषण देता।।
अब गिद्ध नहीं खायेगा लाश
चूहों का नेत्रित्व करेगी बिल्ली।
पढ़े-लिखे सभ्य बैठेगें घर में
चोर-लूटेरे जायेंगे दिल्ली।।

राजीव नयन तिवारी, दुमका, झारखंड

डॉ० बाबूलाल वत्स

भाद्रपद कृष्णा १४ सं. १९९७ में ग्राम नारहट, जिला ललितपुर के साध ब्राहमण परिवार में जन्में डॉ. बाबूलाल वत्स परास्नातक-हिन्दी, हिन्दी भाषा एवं साहित्य, दर्शन शास्त्र, एम.काम, बी. एड., पी.एच.डी. 'कबीर और अखो की दार्शनिक चेतना एवं तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर सन् १९८२ में आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी में की.

सम्प्रति-आर.ई.आई.इण्टर कॉलेज, दयालबाग में अध्यापन

अभिरुचि-भारतीय धर्म, दर्शन, नैतिकता एवं संस्कृति में पूर्ण निष्ठा तथा देश के सर्वागीण विकास के लिए साहित्य के माध्यम से अनवरत प्रयास-रत.

प्रकाशित कृतियां- सन् १९९९ में 'हाव भाव द्वारा व्यक्तित्व जानिये, गायत्री साधना क्यों, क्या, कैसे?

सन् २०००-ओंकार साधना, सौभाग्य का सृजन कैसे करें? सन् २००१-अंक ज्योतिष, २००२-मन के द्वारा उपचार, २००४-महान युग पुरुष पं. श्रीराम शर्मा आचार्यः जैसा हमने उन्हें देखा.

प्राप्त सम्मान- संस्कार भारती आगरा द्वारा काव्य एवं ज्योतिष के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु सम्मान, विश्व हिंदी सम्मेलन दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय हिन्दी सेवी सहस्रताब्दी सम्मान, जैमिनी अकादमी पानीपत द्वारा रामवृक्ष वेनीपुरी शताब्दी सम्मान, इन्देश्वर दयाल दुबे सारस्वत सम्मान, राष्ट्रभारती प्रकाशन तूलेन, म.प्र. द्वारा साहित्य चेतना सम्मान

गोयनका विपश्यनाचार्य श्री सत्यनारायण जी

मूलतः चूरु निवासी श्री सत्यनारायणजी गोयनका का जन्म ब्रहमदेश के प्रमुख नगर मांडले में माघ शुक्ला १२, संवत १९८१ सन! १९२४ के दिन हुआ था. अपनी प्रतिभा से वे दसवीं कक्षा में सारे ब्रहमदेश में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण हुए. पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण आगे नहीं पढ़ सके. उससे पूर्व ब्रिटिश गवर्नर लॉर्ड क्रोकरीन ने उन्हें स्वर्णपदक से सम्मानित किया था. सन् १९४२ में उनका विवाह हुआ जिसे पश्चात जापानी हमले के कारण पलायन करके पैदल भारत की ओर आना पड़ा. चूरु आकर हिंदी विद्यापीठ से विशारद की परीक्षा पास की. व्यापार के उद्देश्य से मद्रास जाकर बसे. तमिलनाडु व केरल में व्यापार का विस्तार किया. महायुद्ध के वाद वर्मा में पुनः ब्रिटिश राज्य स्थापित होने पर रंगून लौट आए और वहां वाणिज्य एवं औद्योगिक संस्थानों की स्थापना की एवं उनका कुशल संचालन किया. साहित्य, संस्कृति व समाजसेवा के कार्यो में रुचि वालों के साथ काम करके वर्मा मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कामर्स की पुनः स्थापना की और उसके अध्यक्ष की हैसियत काम किया. वर्मा के स्वतंत्र होने पर वहॉ के व्यापार मंत्रालय की सलाहकार समिति के सदस्य बने. वर्म्री नागरिकता ग्रहण की. एवं रंगून चेम्बर ऑफ कामर्स एंड इंडस्ट्रीज की स्थापना में सहयोगी बने. रामकृष्ण मिशन सोसायटी व रामकृष्ण मिशन सेवाश्रम की मैनेजिंग समितियों के सक्रिय सदस्य के रुप में उनके द्वारा संचालित अस्पताल में अपनी सेवा का योगदान दिया. इसके अतिरिक्त अन्य कई संस्थाओं से सक्रिय रुप से जुड़े.

धन, संपदा, सत्ता और यथेष्ट यशकीर्ति कमाने के दौरान इनमें अहंजन्य मानसिक तनाव बढ़ता गया. फलस्वरुप ये माइग्रेन जैसी लाइलाज बीमारी के शिकार हो गये. दौरा पड़ने पर मोर्फिया की सुई देनी पड़ती थी. न केवल भारत अपितु विदेशों में भी इस बीमारी के इलाज का कोई लाभ नहीं मिला. अंततः वर्मा के ही एक मित्र तत्कालीन ऐटार्नी जनरल ऊ छान ठुन ने इन्हें विपश्यना के दस दिवसीय शिविर में बैठने की राय दी. रंगून में ही सयाजी ऊ वा खिन द्वारा संचालित इन्टरनेशल मेडिटेशन सेंटर में सन् १९५५ में एक दिवसीय कैम्प में शामिल होने के वाद माइग्रेन की असाध्य बीमारी से छुटकारा मिला. सयाजी ऊ बा खिन ने इनको समझाया कि यह विद्या २५०० वर्ष पहले भारत से ही लाई गई थी तथा अब तक वर्मा में सुरक्षित रही. अब समय आ गया है कि इसे भारतको लौटा कर उऋण होने का. अतः चौदह वर्षो की अपने गुरु के सानिध्य में तपस्या के बाद जून १९६९ में विधिवत इन्हें आचार्य पद पर प्रतिष्ठित करके भारत भेजा और वर्मा द्वारा विपश्यना का अनमोल रत्न लौटाते हुए भारत के पुरातन ऋण से उऋण होने का पुनीत कार्य भार सौपा.

जून १९६९ में गोयनकाजी के भारत आने के दस दिन के भीतर अत्यंत अप्रत्याशित और चमत्कारिक ढंग से २००० वर्षो के लंबे अन्तराल के बाद भारत की पुण्य भूमि पर विपश्यना का पहला शिविर मुंबई में ३ से १४ जुलाई १९६९ तक संचालित हुआ. उसके पश्चात ही विभिन्न क्षेत्रो ंसे शिविरों की मांग होने लगी, स्थायी केन्द्र बने व साधकों की संख्या दिन दूनी रात चोगुनी बढ़ने लगी. सभी सम्प्रदाय के लोगों ने इसे अपनाया एवं लाभान्वित हुए. जगह जगह विपश्यना केन्द्रों का निर्माण हुआ. विपश्यना विशोधन विन्यास की स्थापना इगतपुरी में धम्मगिरि के सन्निकट की जिससे वहां पुरातन विपश्यना साहित्य पर गहन शोध कार्य हो सके. जेलों में तथा पुलिस अकादमी में विपश्यना शिविर एवं केन्द्र लगवाए गए. इस प्रकार विपश्यना के प्रत्यक्ष लाभ तथा मनोविकारों पर विजय, व्यसन विमुक्ति, विभिन्न प्रकार के तनावों सु छुटकारा आदि मानव कल्याणकारी परिणामों के फलस्वरुप विश्व के कोने कोने में विपश्यना की पताका फहराने लगी. यहां तक कि संयुक्त राष्ट्र के प्रधान सचिव कोफी अन्नान की अध यक्षता में आयोजित सहस्राब्दि विश्वशांति शिखर सम्मेलन में श्री सत्यनारायणजी को आमंत्रित किया गया जिसमें विश्व के एक हजार से अधिक धार्मिक एवं आध्यात्मिक नेताओ ने भाग लिया.

भगवान बुद्ध स्वयंप्रणीात विपश्यना साध ाना मार्ग पर चल कर बुद्ध हुए, बुद्धत्व को प्राप्त किया. इस मुक्तिदायिनी, जीवन जीने की कला-विपश्यना साधना को बौद्ध धर्म के एक सीमित अंक से बाहर निकाल कर, एक सार्वजनीन, सर्व धर्मा, सत्य धर्मा, विज्ञान सम्मत प्रणाली के रूप में स्थापित, विकसित व प्रसारित किया. ८० देशों में १५० स्थायी केन्द्र व अनेक जिप्सी अस्थायी केन्द्र स्वयं चालित विपश्यना साधना की शिक्षा दे रहे है. इसके अतिरिक्त हजारों आचार्य, सहायक आचार्य, बाल शिक्षक प्रति वर्ष लाखों प्राणियों को मार्ग दर्शन दे रहे है. भगवान बुद्ध के मूल उपदेशों का शोध ा करके त्रिपिटक का २० कम्प्यूटरों व विद्वानों द्वारा मूल पाली व हिन्दी में अधिकारिक व्याख्या, सम्पादन व प्रकाशन तथा साथ में सीडीरोम/ वेबसाइट व पाली भाषा की शिक्षा भी.

अध्यात्म

क्या धर्म और पंथ एक है?

राजन चौधरी, हैदराबाद

आशीष के घर कुछ दिनों से एक स्वामी जी ठहरे हुऐ हैं. आशीष और उसके छोटे भाई दिनेश को जब अवसर मिलता है वे स्वामी से अपनी शंकाओ का समाधान करते रहते है. आज जब वे स्वामी के कमरे में गये तो वह दिवान पर बैठे थे. उनके हाथ में एक पुस्तक थी. आशीष ने पूछा-'स्वामी जी क्या हम आपका कुछ समय ले सकते है.

स्वामी जी-"हॉ, आओं मैं तो तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा था. तुम्हें यह पुस्तक देना चाहता हूँ."

आशीष-"यह तो पंचतंत्र है. इसकी रचना विष्णु शर्मा ने राजा के मूढ़ पुत्रों के लिए की थी. मैंने इसका अंग्रेजी अनुवाद पढ़ा है."

स्वामी जी-"हॉ इसका अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में हो चुका है. इसे पढ़कर विदेशियों ने बच्चों के लिए कहानी लेखन सीखा. तुम तो ग्यारहवीं-बारहवी कक्षाओं में पढ़ते हो हिन्दी-अंग्रेजी अच्छी जानते हो. इसे भी पढ़ो. इसमें धार्मिक उपदेश है."

दिनेश-"अवश्य पढ़ेगें, धन्यवाद! स्वामीजी उस दिन आपने मुझसे रिलीजन का हिन्दी समानार्थी शब्द पूछा था. मैंने धर्म बताया था, जिसे बहुत लोग मानते हैं, पर आपने उसे गलत बताया था. तो आप ही बताइये रिलीजन का अर्थ क्या है?"

स्वामीजी-"रिलीजन का अर्थ है पंथ. धर्म शब्द देवभाषा संस्कृत का है. उसमें और पंथ में बहुत अंतर है. बहुत लोग इस अंतर को नहीं समझते."

आशीष-"तो स्वामी जी भ्रम कैसे पैदा हुआ?"

स्वामी जी-"इंग्लैण्ड में राजा बनने के लिए रोमन कैथोलिक चर्च का सदस्य होनाा अनिवार्य है, यानि ईसाई होना. लेकिन इंग्लैंड में अनेक पंथो के अनुयायी रहते है. अतः राजा घोषणा करता है कि उसकी नीतियॉ 'सेक्यूलर' होगी. अर्थात पंथ निरपेक्ष होगी ताकि सब खुश रहें. हमारे संविधान में भी सेक्यूलर नीति का आश्वासन दिया गया है. भूल अनुवाद में हुई है. वहीं से भ्रम पैदा हुआ है. पंथनिरपेक्ष के स्थान पर धर्मनिरपेक्ष कर दिया गया. इसका अर्थ है जिसका कोई धर्म नहीं है. यह शब्द प्रचलित हो गये है. इसमें सुधार होना चाहिए."

आशीषः "इण्डिया की आजादी को साठ वर्ष हो गये. यह सुधार अभी तक क्यों नहीं हुआ, स्वामीजी?"

स्वामीजी-"तुम भी तो भारत को इण्डिया कह रहे हो, अंधानुकरण हो रहा है. स्वराज्य हुआ है जब सुराज होगा तब ही ऐसी अनेक भयंकर भूलों का सुधार होगा."

दिनेश-"स्वामी जी सुराज कैसे आयेगा?"

स्वामीजी-"सुशिक्षा और सुसंस्कारों से आयेगा. इनसे वैचारिक क्रांति होगी. देशवासी जगेगे, जाग्रत होगे. भ्रम दूर होगें."

आशीषः"तो स्वामी जी पंथ और धर्म में अंतर क्या है?"

स्वामीजी-"पंथ का अर्थ है पथ यानि रास्ता या मार्ग. पंथ संतो मंहतो ने अपने समय के समाज को उपदेश देने के लिए चलाये. उनसे जातियों, संम्प्रदायों की उत्पत्ति होती गई. विभाजन बढ़ा. लेकिन धर्म अपौरूषेय वेदों पर आधारित है. धर्म का अर्थ है धारण करना यानि कि आचरण में लाना. धर्म के दस लक्षण बताये गये हैं."

दिनेश-"वे क्या है स्वामी जी बताइये ना."

स्वामीजी-"इस मंत्र को याद कर लो अंतर पता लग जायेगा.

धृति क्षमा मोह स्वेतयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः धीर्विधा सत्यम क्रोधो दशकम धर्मम् लक्षणम्।"

आशीषः "स्वामीजी इसे सरल भाषा में बताइये-बड़ी कृपा होगी."

स्वामीजी-"वे लक्षण हैं-धैर्य, क्षमा शीलता, अहंकार त्याग, दया, चोरी न करना, पवित्रता, तन मन की, इंद्रियो पर नियत्रंण, सद्‌बुध्दि, ज्ञान, सत्यपालन एवं क्रोध पर नियंत्रण. जो इन लक्षणों को अपने आचरण में ढाल लेता है वह धार्मिक कहलाता है."

दिनेश-"पंथों में भी संतो ने कुछ अच्छे लक्षण बताये हैं."

स्वामीजी-"हॉ, बताये है. किसी में अहिंसा, किसी में क्षमा, किसी में दया, प्रार्थना, सेवा या किसी में विश्वास को वरीयता दी गई. धर्म संपूर्ण है. धर्म को देशकाल से नहीं बांधा जा सकता. वह संपूर्ण मानवता के हित के लिए है. संकीर्ण नही है. वह वसुधैव कुटुमबंकम में विश्वास रखता है. उसमें पंथों की तरह स्वर्ग-नरक के लालच भय नहीं दिये गये है. धर्म में द्वेश, घृणा, अंधविश्वास नहीं है. वह तर्कपूर्ण, वैज्ञानिक-मनोवैज्ञानिक एवं दार्शनिक है. उसमें बगुला भक्ति को बढ़ावा नहीं है. आध्यात्मिक विकास को वरीयता है."

आशीषः"स्वामी जी आजकल ऐसे सीधे सच्चे दयालु लोगों को चंद चालाक लोग ठग लेते है. ये सतयुग की बाते हैं, तब सब धार्मिक लोग थे."

स्वामीजी-"अच्छे बुरे लोग हर युग में रहे हैं. महत्वपूर्ण है पात्र-कुपात्र की सही पहचान. उसके लिए सूक्ष्म निरीक्षण, विश्लेषण विवेक बुद्धि एवं व्यवहारिकता आवश्यक है."

दिनेशः"इसे समझने का माप दंड क्या है स्वामी जी?"

सभी पाठकों को नव वर्ष २००८ की हार्दिक शुभकामनाएं

ईश्वर आपके घर परिवार को सदा खुशी रक्खें

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज
लोकप्रिय हिन्दी सामाजिक मासिक पत्रिका

'विश्व स्नेह समाज' के पाठकों को विशेष तोहफा. घर बैठे प्राप्त करें वर्ष भर में १२ अंक अपनी प्रिय मासिक पत्रिका

एक प्रति:रु०५/–
विशिष्ट सदस्य:रु० १००/–
द्विवार्षिक सदस्यता:रु०११०/–
पाच वर्ष–रु०२६०/–
दस वर्ष:रू०५००/–
आजीवन सदस्य:रु०१००१/–
संरक्षक सदस्य:रु० २५००/–

स्वामीजी-"सरल सा सिद्धात है-जिनके लाभ हानि, मान-अपमान एक होते है वे मित्र सगे संबंधी हो जाते है अन्यथा शुत्र बन जाते है. इसकी उचित जॉच-परख होनी चाहिये."

आशीष-"यह तो बड़ा कठिन काम है. चालाक लोग दूसरों की विवशता एवं अज्ञान का लाभ उठाते है."

स्वामीजी-"हॉ, महाभारत युद्ध में कौरवों ने भीष्म पितामह, गुरू द्रोणाचार्य आदि को अपने साथ मिला लिया था. भगवान श्री कृष्ण ने गीता के द्वारा अर्जुन को समझाया था कि जो अधर्म के साथ खड़े हैं, उनकी कुछ विवशतायें है. धर्म की रक्षा के लिए उन्हें भी शत्रु मानकर धराशायी करना चाहिये. अर्जुन समझ गया और उसने शत्रुओं को पराजित किया. हमें सद्‍बुद्धि देने वाला सद्‍गुरु चाहिये. इसीलिए सब मंत्रों की रानी गायत्री मंत्र में सद्‍बुद्धि मॉगी गई है. कलयुग में भी अनेक उदाहरण है. जैसे शिवाजी, विवेकानंद, दयानंद, अरविंद, नेताजी आदि."

आशीष-"स्वामी जी यह तो बहुत अच्छी तरह समझ में आ गया किन्तु धर्म, विज्ञान और कला का क्या संबंध है? यह भी कृपया समझाइये."

स्वामीजी-"अच्छा प्रश्न है? तुम जानते हो विज्ञान से हमें पता लगता है कि कोई वस्तु क्या है, कला से पता लगता है कि कोई काम कैसे करें किंतु धर्म से पता लगता है कोई काम क्यों, कब, किसके साथ, कितना करें. धर्म में मापदंड है, नाप तोल है. धर्म बड़ा तप है, साधना है."

दिनेश-"संक्षेप में कहें तो मात्र साक्षरता एवं शिक्षा ही पर्याप्त नहीं, विवेक बुद्धि बहुत महत्वपूर्ण है. धर्म में ये सब है"

स्वामीजी-"बिल्कुल ठीक कहा तुमने-तो अब बताओं रिलीजन का अर्थ क्या है? दिनेश, आशीष (एक स्वर में) रिलीजन का अर्थ धर्म नहीं पंथ है. हम इसका प्रचार करेंगे. दूसरों के भ्रम दूर करेगें. स्वामीजी आपका हार्दिक धन्यवाद. स्वामीजी-"आयुष्मान भवः"

कहॉनी

नीम का पेड़

✍सनातन कुमार वाजपेयी,जबलपुर

परकोटे की दीवाल के किनारे से सटा ऑगन में स्थित सैकड़ों वर्ष पुराना नीम का हराभरा पेड़. चारों ओर फैली हुई डालियॉ. प्राणवायु लुटाती हुई हरी हरी पत्तियॉ बरबस अपनी ओर सबको आकर्षित कर लेती.

कहते हैं अनोखे लाल के दादा ने इसे स्वयं अपने ही हाथों से रोपा था. अनोखे लाल विस्तर छोड़ने के उपरान्त सर्व प्रथम सपरिवार इसे ही प्रणाम करते. पूर्वजों की यही तो निशानी थी उनके पास. सो उसको उन्हीं का प्रतिरुप मानकर सम्मान करते.

अनोखे लाल के पिता अजीत ने बताया था “कि दादा इस पेड़ से बहुत अधिक प्यार करते थे. एक दिन किसी ग्वाले ने उसकी एक टहनी क्या तोड़ ली? वे लाठी लेकर उसे मारने झपट पड़े. आसपास खड़े लोग उन्हें दौड़कर न पकड़ते तो उस दिन न जाने क्या हो जाता. वे बहुधा कहा करते कि ये पेड़ पौधे परमात्मा ने जीवों के कल्याण के लिए उपहार स्वरुप संसार को भेंट किये हैं. किन्तु मनुष्य स्वार्थ वश इन्हें विनष्ट कर स्वयं अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारते हैं और अपने अस्तित्व के लिए खतरा पैदा करते हैं” पेड़ तो हमारे हितैषी और सच्चे मित्र है.

उन्होंने यह भी बताया था कि दादा ने इसी पेड़ के नीचे एक शिवालय भी बना रखा था जो आज भी विद्यमान है. भगवान शिव के पूजन के साथ ही वे इस पेड़ की जड़ों में भी जल ढारते और अक्षत चंदन चढ़ाकर उसका पूजन करते थे. तब से आज तक यह परंपरा निरन्तर उनके घर में चली आ रही है.

शादी विवाह के शुभ अवसरों पर सभी को निमंत्रण देने के साथ इस पेड़ को भी आद पूर्वक निमंत्रण दिया जाता है और पक्वानों से पत्तल सजाकर उसके निकट रखी जाती. भले ही पक्षी और कौवे उसे चट कर जाते. सबकी मान्यता यही थी कि दादा ही इनके रुप में आकर भोजन ग्रहण करते हैं.

नोखेलाल के मकान के सामने से ही नगर का मुख्य मार्ग था. जिसमें रात दिन आने जाने वालों के रेले चलते रहते. सड़क से सटकर ही उस पार लम्बा चौड़ा मैदान था. जिसमें रविवार के दिन बहुत बड़ा बाजार भरता था. रात में नगर के अधिकांश पक्षियों का रैन बसेरा यह वृक्ष ही बनता. भोर होते ही वे अपने मधुर कलरव गान से भगवान भुवन भास्कर का स्वस्ति गायन करते. उनकी चहचहाहट सुनते ही नोखेलाल के परिवार के सभी सदस्य जाग जाते और अपने अपने दैनिक कार्यो में जुट जाते.

बाजार के दिन बाहर से आने वाले हारे थके लोग उसी पेड़ की शीतल छाया में घंटो बैठकर अपनी थकान दूर करते और शान्ति का अनुभव करते. हवा के हल्के झोकों के साथ ही उसकी डालियॉ लहराने लगती. पत्ते नाचना प्रारंभ कर देते. सर सर की सुरीली ध्वनि से सर्वत्र संगीतमय वातावरण की निर्भिति हो जाती. जिससे लोगों को असीम आनन्द की अनुभूति होती.

नोखेलाल के परिवार के सभी लोग प्रतिदिन नीम की ही दातौन करते. जिससे उनके दॉत मोती से चमकते. उनको कभी कोई बीमारी न होती. किसी के शरीर में जरा सी भी पीड़ा हुई नहीं कि उसने नीम के पत्तों को पानी में उबाल कर उस गर्म पानी से स्नान कर लिया. पीड़ा तुरन्त रफू चक्कर. मलेरिया बुखार आने पर नीम की पत्ती, चिरायता और गिलोय को सम भाग में मिलाकर काढ़ा बना कर पी लिया. बस तीन दिन में ही बुखार हाथ जोड़ने लगता. चर्म रोग होने पर उसकी पत्तियॉ चबा ली जाती. फिर वे ऐसे भागते कि दुबारा लौटने का नाम ही न लेते. इस प्रकार यह नीम का पेड़ न जाने कितनी बीमारियों का दुश्मन था. नोखे लाल के घर का तो यह बिना पैसों का वैद्य ही था. पास पड़ोस के लोग भी जब तब इसका इसी प्रकार उपयोग करते.

नोखेलाल की पत्नी सपनिया तो उस पर अपने प्राण ही देती थी. प्रतिदिन अनेक घड़े पानी उसकी जड़ों में सीचना उसी का काम था. उसका छोटा बेटा हीरा उसकी जड़ो में मिट्टी चढ़ाता. सूखी टहनियों को निकाल कर अलग करता. जब तब खाद देता. उसे ऐसा अनुभव होता कि इस रूप में वह अपने दादा की ही सेवा कर रहा है. गर्व से उसकी छाती फूली न समाती.

नोखेलाल की दोनों बेटियॉ झुनिया और मुनिया सावन के महीने में उसकी निचली डाल में झूला बॉध लेती. झूम-झूम कर मधुर गीत गाते हुये वे झूला झलती. जिसे सुनकर मुहल्ले की सभी लड़कियों का वहॉ मेला सा लग जाता. नोखेलाल और, उनकी पत्नी सपनिया यह देख आनन्द में विभोर हो जाते.

बसन्त ऋतु के आते ही नीम के पुराने सभी पत्ते पीले पड़कर झड़ जाते. और उनके स्थान पर नई हरे रंग की कोपले सज जाती. कुछ दिन के बाद ही पूरा पेड़ सफेद रंग के फूलों के गुच्छे से लद जाता. भौरों की भीड़ की भीड़ आ आ उन पर मॅडराने लगती. सभी ओर सुगन्ध फैल जाती. धीरे-धीरे उनमें नन्हीं नन्हीं निबौरियॉ अठखेलियॉ करने लगती. ग्रीष्म ऋतु के आते आते तक वे पकड़कर पीली सुनहरे रंग ही हो जाती.

निबौरियों के पकते ही चिड़ियों और

कौओं की भीड़ दिन भर उसी में अपना डेरा जमाये रहती. एक डाल से दूसरी डाल में फुदक फुदक कर वे जी भर निबौरियॉ खाते और चहचहाहर से समूचे वातावरण को गुंजायमान करते.

निबौरियों की गुठलियॉ अन्दर ऑगन में और परकोटे के बाहर बिछ जाती. ऑगन की तो प्रतिदिन साफ कर दी जाती किन्तु बाहर की ज्यों की त्यों ही पड़ी रह जाती. बरसात लगते ही उनसे नन्हें नन्हें नीम के पौधे बाहर झॉकने लगते. तनिक बड़े होते ही शहर और आसपास के लोग उन्हें उखाड़ कर ले जाते और अपने ऑगन व बगीचों में सजाते.

ऑगन में इस नीम रुपी वैद्य की सतत उपस्थिति के कारण नोखेलाल का परिवार सदैव स्वस्थ रहता. उसके घर में धन धान्य की भी कभी कोई न हो पाती. इसमें वह अपने दादा का शुभाशीर्वाद एवं नीम की कृपा मानता.

नोखेलाल का पारिवारिक जीवन इस प्रकार सुख और शान्ति से बीत रहा था. तभी एक दिन आकस्मिक रूप उसे नगर निगम की ओर से एक नोटिस प्राप्त हुआ.

नोटिस में लिखा हुआ था कि आवागमन के बढ़ते हुये दबाव को देखते हुये नगर के मुख्य मार्ग को चौड़ा किया जाना है. जिसमें किनारे के अन्य मकानों, दीवालों के साथ ही आपकी बाउड्री बाल भी तोड़ी जायेगी और नीम का पेड़ को काटा जायेगा. बदले में शासकीय नियमानुसार मुआवजा दिया जायेगा.

नोटिस पढ़ते ही नोखेलाल सूखकर आधा हो गया. वह दौड़ा-दौड़ा नगर निगम कार्यालय में पहुॅचा. अधिकारियों से आरजू मिन्नत की. किन्तु किसी ने भी उसकी एक न सुनी.

अन्त में हॉफता हुआ वह नगर के नामी वकील के पास परामर्श करने के लिए गया. वकील के पैर पकड़ कर उसने गिड़ गिड़ाते हुये उनसे प्रार्थना की- 'साहब, जैसे बने तैसे आप मेरे नीम के पेड़ को कटने से बचा लीजिये. आप जो भी फीस चाहेगें मैं आप दूॅगा. वकील ने अपने पैर छुड़ाते हुये उससे कहा-'देखो दादा, जनहित में उस मार्ग का चौड़ीकरण किया जाना परमावश्यक है. जिसमें आपकी वाउड्री बाल और नीम का पेड़ बाधक है. अतः आपकी वाउंड्री बाल तोड़ने के साथ ही नीम का पेड़, काटा जाना भी जरुरी हैं. बदले में आपको मुआवजा भी दिया जा रहा है. अतः निरूपाय हूॅ. आपकी कोई मदद नहीं कर सकता.

मन मारकर नोखेलाल अपने घर वापिस आ गये. उनकी दिन की चैन और रात की नींद समाप्त हो गई. उनका मत रात दिन नीम के पेड़ में ही उलझा रहता. घर वालों ने एवं मुहल्ले पड़ोस के लोगों ने बहुतेरा समझाया. किन्तु उनके मन में किसी भी प्रकार धैर्य न आ पाता. उनके पूर्वजों की धरोहर उनकी ऑखों के सामने ही छीनी जाने वाली थी. पर करते क्या बेचारे. निरुपाय थे वे.

सातवे दिन प्रातः काल ही एक दैत्याकार दमकल के साथ ही नगर निगम के अधिकारियों और कर्मचारियों का अमला वहॉ आ धमकां देखते ही देखते आनन फानन मार्ग में अवरोध पैदा करने वाले मकानों, दीवारों आदि के साथ उनकी वाउंड्री बाल भी ध्वस्त होकर एक सपाट मैदान के रूप में परिवर्तित कर दी गई.

हाथों में कुल्हाड़ियॉ थामे दो मजदूर नीक के पेड़ में दनादन प्रहार करने लगे. नोखेलाल अपना सिर थामें ऑगन में बैठे अश्रुपात कर रहे थे. कुल्हाड़ों के प्रहारों की घिनौनी और कठोर आवाज से वे तिलमिला कर रह जाते. उन्हें ऐसा लगता कि उनके दादा को ही काटा जा रहा है. यह निष्ठुर दृश्य उनसे देखा नहीं जा रहा था जब तब उनके मुॅह से चीख-सी निकल पड़ती. उनकी ऑखें बन्द हो गई.

जब ऑखें खुली तो उन्होंने देखा कि नीम का पेड़ कट चुका है. उसके अंग-अंग काटकर टुकड़े-टुकड़े कर दिये गये है. नगर निगम का अमला ट्रक में भर कर उन्हें ले जा रहा है. वे बदहवाश से ट्रक के पीछे दौड़ते हुये कार्यालय के फाटक पर जाकर बेहोश हो गिर पड़े. घर पर सूचना दी गई. लड़के वाहन लेकर गये और उन्हें घर पर लिवा लाये. तीन दिन के लगातार उपाचार के बाद ही वे होश में आ सके. लड़को ने ऑगन में एक दूसरा नया नीम का पौधा रोप दिया था वह क्रमशः बड़ा हो रहा था. नोखेलाल को आश्वस्त करते हुये उन्होंने समझाया 'पिताजी, यह पेड़ भी धीरे धीरे बड़ा होकर उसी जैसा हो जायेगा. आप चिन्ता न करें.

लड़कों की बात सुनकर पहले तो उन्होंने एक लम्बी उसास ली. फिर धीरे-धीरे पेड़ के निकट गये. हरे भरे लहराते नये पौधे को देखकर उनका मन नई-नई संभावनाओं से भरकर नाचने लगा. वे उसकी नन्हीं-नन्हीं टहनियों को सहला रहे थे.

वो मद भरी ऑखों में, डाले हुये काजल है
बस्ती में जिसे देखों, मदहोश है घायल है
ये कैसे उजाले हैं, तहज़ीब है ये कैसी
आवारा निगाहें है, उड़ता हुआ ऑचल है
इक राह है नफ़रत की, इक राह मुहब्बत की
bd jkg eadkWVsgS bd jkg eae[ey gS अनु जसरोटिया

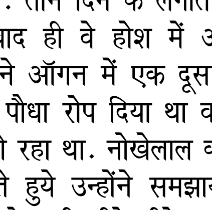

कहानी

सच्चा न्याय

रामभभूती सिंह, मीरजापुर

आज रामदीन का मन बहुत खुश है और वह बार-बार एक एक ही बात की चर्चा कर रहा है कि उसके सपने आज पूरे हो गये. रामदीन गॉव में रहने वाला एक गरीब किसान है मगर उसके पास एक अनूठी दौलत और उसकी बेटी राधा है. जो कालेज से बी.ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है.

रामदीन ने आज उसके लिए मन पसन्द दूल्हा ढूढ निकाला है. आज उसका विवाह तय कर दिया है. यह दूल्हा, 'विजय' है जो 'रामकुमार' मजिस्ट्रेट का एकलौता बेटा है तथा पेशे से वकील है.

उसकी वकालत ऐसी चलती है कि बड़े-बड़े सीनियर वकील भी उससे ईर्ष्या करते है. आज रामदीन की खुशी का कोई ठिकाना नहीं है. मगर एक टीस सी उसके मन की बहुत गहराई में उठती है. वह इस टीस को बार-बार दबाने की कोशिश करता है मगर वह बार-बार प्रकट होना चाहती है. वह अपनी पत्नी कौशिल्या को कैसे समझाए कि वह राधा बेटी की शादी अपना खेत सेठ के यहॉ गिरवी रखकर कर रहा है.

यह सुनकर कौशिल्या के ऊपर क्या गुजरेगी? इसलिए उसने संकल्प कर लिया है कि चाहे जो भी हो इस बात को कौशिल्या से नही बतायेगा. औरत की जात न जाने क्या कर बैठे.

एक बार कौशिल्या ने पूछा भी था कि मजिस्ट्रेट साहब की बारात को कैसे सम्भालोगे? रामदीन ने मुस्कराकर कहा था कि सब भगवान सम्भालेगा. कौशिल्या रह-रहकर व्याकुल हो जाती क्योंकि घर की परिस्थिति उससे छिपी नहीं थी. वह उस घर की मुख्य सदस्य थी. दिन रात भगवान की प्रार्थना में लगी रहती. न जाने कितनी दुआऍ अपनी बेटी के लिए मांगती. उन्हीं की दुआओं का असर था कि राधा इतने बड़े घर में जा रही थी.

आज मजिस्ट्रेट साहब की बारात बड़े ही धूम-धाम से रामदीन के घर आई है और रामदीन की व्यवस्था देखने लायक है. कौशिल्या को तो इधर काफी दिनों से इतनी व्यस्तता है कि भगवान को काम करते-करते ही याद कर लेती है. बेटी की शादी जो ठहरी. सुस्ताने तक को फुर्सत नहीं. राधा को सहेलियों ने सजाकर आज ऐसी दुल्हन बना दिया है कि शायद उस जमाने में कृष्ण प्रिया राधा भी इस राधा के सामने धूमिल पड़ जाय. विवाह का कार्य सम्पन्न हो गया.

बाहर से आने वाले किसी भी व्यक्ति को रामदीन की यथार्थ स्थिति का पता हीं नहीं चल पाया. जब इसका पता कौशिल्या को नहीं चला तो किसे चल पायेगा. रामदीन ने सोच रक्खा था कि समय से पहले अपनी गिरवी रखी जमीन को छुड़ा लेगा. बस एक बार खेती साथ दे जाती तो खेत गिरवी रखने का प्रश्न ही नहीं उठता था. मगर खेती बार-बार धोखा देती चली जा रही थी तो क्या किया जाय. खेती का ध न्धा तो लाटरी है ही. रामदीन इसी उधेड़बुन में फसने लगा. फिर सोचा कि चलो बेटी के लिए कर्ज क्या चीज है. बेटी के लिए तो जमीन क्या लोग अपनी जिन्दगी गिरवी रख देते है. वह भी आखिर एक दौलत है. उस पर हमारी बेटी. कैसा बनाया है भगवान ने उसे. पूरे कालेज में था उसका कोई मुकाबला करने वाला.

"देखना मजिस्ट्रेट साहब जरुर उसे एल.एल.बी. करायेंगे और डिग्री लेने के बाद वह काले कोट पहनकर अदालतों में गरमा-गरमा बहसें करेगी. मेरी बेटी के सामने बड़े से बड़े वकील हार जायेगे. बड़े भाग्य से ऐसी बेटी मिलती है."

धीरे से राधा रामदीन के चरणों में गिरती है और रामदीन का ध्यान उचटता है और यथार्थ की दुनिया में आता है. राधा गुड़िया की तरह सजी हुई थी. रामदीन उसके भाग्य को मन ही मन सराह रहा है.

मगर यह क्या? राधा हाथ में कंगन बधे बधाये बारात में जाती है. लोग आश्चर्य से देखते हैं कि यह तो वहीं लड़की है जिसकी शादी हुई है. ऐसा पहली बार हुआ था कि वह लड़की बारात में आये जिसकी शादी अभी-अभी हुई हो. लोग न जाने कैसी-कैसी बाते करने लगे मगर राधा जाकर ठीक

ग़ज़ल

लड़ झगड़ कर न यूं ही वक़्त गंवाया जाए
दुश्मनों को भी चलो दोस्त बनाया जाए

नफ़रतों के ये सभी ख़ार उखाड़ो यारो
फिर चमन प्यार के फूलों से सजाया जाए

जिसको सुन-सुनके सब आपस में गले मिल जाएं
अब तराना वो मुहब्बत का सुनाया जाए

जो शजर बनके सदा ख़ार ही बरसाएंगे
ऐसे पौधों को अभी काट गिराया जाए

बंद कमरे में कहां दिल का सुकूं पाओगे
आओ! मैदां में पतंगो को उड़ाया जाए

शमअ हर दिल में मुहब्बत की जलाकर ऐ दीप
चलो नफ़रत के अंधेरे को मिटाया जाए।।

डॉ. दीप बिलासपुरी, यमुनानगर, हरियाणा

मजिस्ट्रेट साहब के सामने ही बैठ जाती है और मजिस्ट्रेट साहब के पैर छूती है. मजिस्ट्रेट साहब तो हैरान है कि क्या बात हो गयी. मगर बहू के सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देते है. कुछ भी हो बहू के बारे में जैसा सुना था वैसा पाया.

बहू से पूछा, "यहॉ कैसे आई."

राधा ने उत्तर दिया, "कल से हमारा बाप भूमिहीन हो जायेगा.

मजिस्ट्रेट साहब ने पूछा, "क्यों?"

राधा ने बताया कि मेरी शादी के लिए उन्होंने सारी जमीन गिरवी रख दी है और जिस व्यक्ति के यहॉ गिरवी रखा है वह समय बीतते ही सारी जमीन पर कब्जा कर लेगा.

मजिस्ट्रेट साहब को लगा जैसे उनकी अदालत में खड़ा कोई न्याय की गुहार कर रहा है. मजिस्ट्रेट साहब सोच में पड़ गये. थोड़ी देर बाद पूछा कि कितनों रुपयों में रखा है?

राधा बोली-"मात्र पचास हजार रुपये में."

मजिस्ट्रेट साहब ने अपना बाक्स खोला और पचास हजार रुपये राधा के हाथ पर रख दिया. राधा ने उन रुपयों को ज्योहिं रामदीन के हाथ में रखा त्योंहि रामदीन रोने लगा. पूछा, "बेटी तुम्हें यह कैसे पता चला कि मैंने सेठ के यहॉ अपनी जमीन पचास हजार में गिरवी रख दिया है?"

राधा ने कहा, "मैं आपका पीछा करते-करते वहॉ तक गयी थी जब आप सेठ के यहॉ जा रहे थे. मैनें सब सुन लिया था. मैंने आपके मन के कोन की उस टीस को भी देख लिया था जिसे आप मेरी मॉ से भी छुपा गये थे."

राधा के इस कार्य से मजिस्ट्रेट साहब अत्यन्त द्रवित हो गये थे और ऐसी बहू पाकर अपने मन में गर्व का अनुभव कर रहे थे. समधी रामधीन से बोले, "समधी साहब जल्द से जल्द विदाई की तैयारी कीजिए. मेरा घर बहू का इन्तजार कर रहा है."

स्वामी विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द गये दूर देशों में,
भारतीय संस्कृति का केतु फहराया।
शैशव के वीरेश्वर, कहा ये नरेन्द्र नाथ,
नाम रामकृष्ण को, विवेकानन्द भाया।।
जन्म सिमूलिका में, पास कलकत्ता के,
दूर हिन्द-मूलिका की धाक जमा आया।।
पश्चिम की संस्कृति तो जुगनू सी जान पड़ी,
ज्यों ही विवेकपूर्ण आफताब पाया।।
विश्वनाथ दत्त पिता, मातु भुवनेश्वरी,
धन्य भाग्य भारत का लाल कहलाया।।

डॉ. ओमप्रकाश बरसैया ऊँकार, झॉसी, उ.प्र.

स्व० कवि कैलाश गौतम की स्मृति में

कलुआ आया है

शहर में पूरा साल बिता कर कलुआ आया है।
पॉव में जूता चॉनी की ॲगूठी बनवाया है।
याद है घर से एक रात चोरी से भागा था।
टेकुआरी रापी तो थी पर पास न धागा था।
पास न धागा तन पर केवल जंगिया-गंजी थी।
भूखों मरने की हालत थी इतनी तंगी थी।
लौटा है खूब ठाट-बाट से बाल बढ़ाया है।
पॉव में जूता ....
पण्डित जी को खटक रहा है ठाकुर जी को चिंता है।
नाक रगड़ता था कल तब अब नहीं चीन्हता है।
नहीं चीन्हता है न पहले जैसे गुनता है।
बार-बार बुलवाने पर भी नहीं सुनता है।
बदल गयी है ऑखे उसकी नोट कमाया है।
पॉव में जूता.................
जहॉ भी मिलती दो महिलायें चर्चा करती है।
राम करे सबका दिन बहुरे आहें भरती है।
आहें भरती बाते करती रोती जाती है।
मोती जैसे अश्रु राह में बोती जाती है
बाप को बंडी मॉ को चिकनी साही लाया है।
पॉव में जूता.......................
सेठ गॉव का मूल-सूद सब जोड़कर बैठा है।
लेगे हिसाब पाई-पाई रस्सी सा ऐठा है।
रस्सी सा ऐठा है मुर्दे गडे उखड़ते हैं।
यार-दोस्त खर्चा-पानी को उसे पकड़ते हैं।
कदम-कदम पर खीचातानी से घबड़ाया है।
पॉव में जूता......................
हर्रे एक गॉव भर खोखी किसको-किसको आटै।
सबकर कर्जा लेन दार सब किसको-किसको बाटै।
किसको-किसको बाटै धीरज उसका छूट गया।
सदा-सदा के लिए गॉव से नाता टूट गया।
भगा दुबारा आज तलक न मुँह दिखलाया है।
पॉव में जूता.......................

अजय चतुर्वेदी 'कक्का', सोनभद्र, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++++

प्रिय भैया/बहिनों

आप लोगों को कहॉनी पढ़ना तो अच्छा लगता ही होगा. इस बार मैं साबिर हुसैन अंकल की कहॉनी जामून का पेड़ आप लोगों के लिए छाप रही हूॅं. यह कहॉनी आप लोगों को पसंद आये तो अपनी बहन को जरुर लिखिएगा. आपकी बहन

संस्कृति 'गोकुल'

स्नेह बाल मंच

जामुन का पेड़

साबिर हुसैन, खीरी, उ.प्र.

ब्रजेंद्र के पड़ोसी रमजान चाचा के घर में लगे जामुन के पेड़ को पके-पके जामुनों से लदा देखकर मोहल्ले के लड़को के मुंह में बरबस ही पानी आ जाता, लेकिन किसी लड़के में इतना साहस नहीं था कि वह जामुन तोड़ने के लिए एक पत्थर भी फेंके. भूल से अगर किसी ने एक पत्थर भी फेंक दिया तो रमजान चाचा चिल्ला चिल्लाकर पूरा मोहल्ला हिला देते.

रमजान चाचा पूरे मोहल्ले के चाचा है. उन्हें मोहल्ले के बच्चे ही नहीं बड़े भी चाचा ही कहते है. दुबले-पतले सफेद दाढ़ी, उलझे-बाल और कुर्ता तहमद में उनकी बिलकुल अलग ही पहचान है. दूर से ही देखकर लोग जान जाते है कि रमजान चाचा, आ रहे है. वह अधिकतर घर में ही रहते. उनका घर भी पूरे मोहल्ले में बिल्कुल अलग से पहचाना जा सकता है, उन्हीं की तरह बूढ़ा और विशाल आंगन में लगा जामुन उनकी नाम का प्लेट का काम करता है.

वैसे अब उन्हें कोई ढूढने नहीं आता, पहले लोग अक्सर उनकी तलाश में आ जाते थे. उनकी शीशे की बनाई वस्तुएं दूर-दूर तक जाती थी. बाजार में उनकी दुकान थी, अब उसी दुकान के किराए से अपना खर्च चलाते है, घर में उनके अलावा और कोई नहीं है. पांच साल पहले तक उनका भी परिवार था. एक शरारती बेटा करीम था, जो मोहल्ले के लड़कों के साथ मिलकर ही घर के जामुन पर पत्थर फेंका करता था. जामुन के नीचे सदैव लड़को का जमघट लगा रहता था.

एक दिन ब्रजेन्द्र कमरे में बैठा पढ़ रहा था. तभी रामआसरे ने आकर बताया कि रमजान चाचा सारे जामुन तुड़वा रहे है.

ब्रजेद्र तुरंत रामआसरे के साथ बाहर चला आया. वहां से उसने देखा कि एक आदमी जामुन तोड़ रहा था, नीचे रमजान चाचा खड़े थे. उनके पास जामुनों का ढेर लगा था.

जब तक करीम था, तभी लड़के बेध ड़क रमचान चाचा के घर में चले जाते थे. उस साल अचानक शहर में दंगा भड़क उठा था. पूरे मोहल्ले में रमजान चाचा अकेले मुसलमान थे. पहले वहां कई मुसलमान परिवार रहते थे. लेकिन वे अपने घर बेचकर दूसरे मुहल्ले में जा बसे थे, जहां मुसलमानों की आबादी अधिक थी, लेकिन रमचान चाचा ने कहीं जाने से साफ मना कर दिया था. दंगे के समय ब्रजेद्र के पिता रमचान चाचा के परिवार को अपने घर में ले आये थे, भीड़ का कोई भरोसा नहीं होता. उस समय करीम बीमार था. दंगे भड़कते रहे और कर्फ्यू के दिन बढ़ते रहे. करीम का इलाज सही नहीं हो सका और वह चल बसा. अपने दोस्त की मौत पर ब्रजेंद्र भी बहुत रोया था. दो तीन महीने के बाद ही बेटे के दुःख में उसकी मां भी चल बसी और रमजाना चाचा बिलकुल अकेले रह गये थे.

रमजान चाचा ब्रजेंद्र से बड़ा स्नेह करते है, लेकिन उनके चिड़चिड़े स्वभाव के कारण ब्रजेद्र उनसे कम बोलता है. रमजान चाचा अक्सर उसी के घर आ जाते है वरना कहीं नहीं जाते.

काफी दिनों बाद रमजान चाचा ने काम को हाथ लगाया. वे एक बहुत ही सुंदर लैम्पशेड बना रहे थे, इस कारण जो लड़के जामुन बीनने आंगन में चले जाते थे, उनका प्रवेश भी वर्जित हो गया था.

शायद रमजान चाचा ने जामुन बेच डाले, रामकुमार बोला.

'हम लोग जामुन बीन लेते थे, यह भी उन्हें पसंद नहीं आया.' मुंह बिगाड़ते हुए रामआसरे बोला.

'जामुन बेचने पर उन्हें पैसे मिलेंगे, हम लो तो मुफ्त में ही खा जाते थे.' रामकुमार बोला.

ब्रजेद्र को रमजान चाचा पर गुस्सा आ रहा था, जिन्होंने सारे जामुन बेच डाले.

'रमजान चाचा ने बहुत बुरा किया.' रामआसरे बोला.

'चाचा को ऐसा सबक सिखाया जाये कि वह भी हम लोगों पर चिल्लाना बंद कर दें.' सुधीर बोला.

'यह ठीक रहेगा, मैं उनका लैम्पशेड तोड़ दूंगा', ब्रजेंद्र ने कहा.

'अगर किसी ने देख लिया तो मुसीबत आ जाएगी,-सुधीर बोला.

'देखेगा कोई कैसे, मैं अपनी छत पर से निशाना लगाऊंगा,' ब्रजेद्र ने कहा और घर की ओर चल दिया.

ब्रजेद्र घर पहुंचा और सीधे छत पर चला गया. उसने देखा लैम्पशेड आंगन में मेज पर रखा हुआ था. आसपास देखकर उसने निशाना लगाया, पहला निशाना चूक गया, लेकिन दूसरे पत्थर में वह लैम्पशेड टुकड़े-टुकड़े हो गया. शाम को ब्रजेद्र पार्क में खेलकर घर लौटा, तो उसने देखा रमजान चाचा उसके ड्राइंग रुम में बैठे हुए थे.

ब्रजेद्र ने सोचा वापस लौट जाऊं. तभी रमजान चाचा ने उसे देख लिया, 'आओ बेटा, मैं तुम्हारे लिए जामुन लाया हूॅं', रमजान चाचा उसे देखते ही बोले.

हस्ताक्षर में छिपा है व्यक्तित्व

हस्ताक्षर व्यक्ति के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण आईना होता है. हस्ताक्षर करने वाला व्यक्ति अपने हस्ताक्षर को सुन्दर से सुन्दर बनाकर लिखना चाहता है. क्या आपने सोचा की हस्ताक्षर के माध्यम से किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व को जाना जा सकता है. देखिए कुछ रहस्य-

जो व्यक्ति अपने हस्ताक्षर स्पष्ट करते हैं तथा हस्ताक्षर के अन्तिम शब्द की लाइन या मात्रा को इस प्रकार खींच देते हैं जो ऊपर की तरफ जाती हुई दिखाई देती है, ऐसे व्यक्ति लेखक, शिक्षक तथा विद्वान होते है तथा हरेक के साथ सहयोग करने के लिए तैयार रहते है. ऐसे व्यक्ति को जीवन के उत्तरार्थ में काफी पैसा व सम्मान मिलता है. यह व्यक्ति जिसके सामने जाता है वह किसी भी ओहदें का क्यों न हो हमेशा सम्मान ही पाता है. मृदुभाषी, मिलनसार, समाजसेवक, परोपकारी होने के साथ ही साथ ऐसे व्यक्ति कभी किसी का बुरा नहीं सोचते.

जिन व्यक्तियों के हस्ताक्षर का प्रथम, बीच का तथा अंतिम वर्ण ऊंचा-नीचा होता है, ऐसे स्त्री-पुरुष सेक्सी होते है तथा मौका मिलते ही किसी को भी अपनी हवस का शिकार बना सकते है. ऐसे व्यक्ति दिल खोलकर खर्च करते है किन्तु सही कामों में खर्च करना नहीं जानते. इन व्यक्तियों के मन में हमेशा दूसरों को नीचा दिखाने का भाव रहता है. ऐसे व्यक्ति अल्पायु भी बताये जाते है. जो व्यक्ति अस्पष्ट हस्ताक्षर करता है वह अपने जीवन को सामान्य रुप से नहीं जी पाता. उसके मन में हर समय महत्वाकांक्षा बनी रहती है. इस प्रकार का व्यक्ति राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ, अपराधी या बिजनेसमैन बनता है, वह समाज से कटने लगता है तथा उसकी एक से अधिक सहगामिनी होती है. ऐसा व्यक्ति अपने पत्नी को धोखा दे सकता है. किन्तु वह स्वयं कभी भी धोखा नहीं खाता है. हर समय ऊंचाई पर पहुचंने की ललक के कारण ऐसा व्यक्ति किसी को कभी भी धोखा दे सकता है या किसी की हत्या कर सकता है.

जो व्यक्ति अपने हस्ताक्षर के शब्दों को काफी घुमा-फिराकर तथा सजाकर लिखता है, वह किसी न किसी हुनर का मालिक अवश्य होता है. ऐसे व्यक्तियों का जीवन उत्तरार्द्ध में काफी अच्छा होता है. गायक, पेंटर, कलाकार आदि ऐसे ही हस्ताक्षर वाले हुआ करते है. जो व्यक्ति अपने हस्ताक्षर के अन्तिम शब्द के नीचे फलस्टाफ का निशान लगाता है, ऐसा व्यक्ति विलक्षण प्रतिभा का धनी होता है. यह व्यक्ति जिस क्षेत्र में भी जाता है काफी प्रसिध्दि प्राप्त करता है. ऐसे व्यक्ति से सम्मानित व्यक्ति भी मिलने को उत्सुक रहते हैं.

जो व्यक्ति अपने हस्ताक्षर का पहला लेटर काफी बड़ा रखता है, वह रंगीन मिजाज का संकोची व कम बोलने वाला होता है. वह व्यक्ति धनी, लोकप्रिय, प्रतिष्ठा पाने वाला, उदार व उच्च पद को प्राप्त करने वाला होता है. वह कई भवनों का मालिक बनता है तथा सम्पूर्ण ऐश्वर्य को प्राप्त करने वाला होता है. ऐसा व्यक्ति अपनी पत्नी के प्रति वफादार होता है तथा दूसरी स्त्रियों से कभी भी शारीरिक संबंध स्थापित नहीं करता.

जो व्यक्ति अपने हस्ताक्षर के नाम का पहला वर्ण सांकेतिक रुप में तथा उपनाम पूरा लिखता है एवं हस्ताक्षर के नीचे फुलस्टाप लगाता है, ऐसा व्यक्ति भाग्य का धनी होता है तथा व्यवहार कुशल, सम्मान प्राप्त करने वाला एवं मृदुभाषी होता है. वह अध यात्मक में विश्वास रखता है, इसी कारण उसे किसी भी प्रकार की लालसा नहीं रहती. वह अपने जीवन में जो चाहता है सब पूरा हो जाता है.

जो व्यक्ति अपने हस्ताक्षर एकदम छोटा व तोड़-मरोड़ कर करता है, वह धूर्त व चालाक होता है.उसका हस्ताक्षर पढ़ने में नहीं आता. वह अपने फायदे के लिए किसी का भी नुकसान कर सकता है. जो व्यक्ति अपने हस्ताक्षर के नीचे दो लाइन खींचता है, वह भावुक होता है तथा मानसिक स्तर से कमजोर होता है. उसमें असुरक्षा की भावना हमेशा समायी रहती है. वह इस स्वभाव के कारण आत्महत्या तक कर सकता है.हस्ताक्षर का सीधा संबंध मानसिक विचारों से होता है.

साभारःसमाचार क्रांति, खड़गपुर

मम्मी चाय ले आई थी. रमजान चाचा चाय पीते हुए बोले 'जामुन पक गये थे, इसीलिए तुड़वा लिए, ये लड़के खाते कम बरबाद अधिक करते थे, मैंने पूरे मोहल्ले में बांट दिए.'कल तो तुम्हार जन्मदिन होगा?' कुछ रुककर चाचा फिर बोले.

ब्रजेद्र को आश्चर्य हुआ कि उससे अधिक रमजान चाचा को उसके जन्मदिन की यादहै 'यह जामुन रख आओ.', मम्मी ने कहा. वह जामुन उठाकर चल दिया. उसे पश्चाताप हो रहा था कि उसने बेकार ही उनका लैम्पशेड तोड़ दिया.

'मेरी तो किस्मत ही खराब है, मैंने ब्रजेद्र के लिए एक लैम्पशेड बनाया था, सोचा था उसके जन्मदिन पर दूंगा. शायद किसी ने जामुन पर पत्थर फेंका होगा, जो लैम्पशेड पर जा गिरा जिससे वह टूट गया.' रमजान चाचा गहरी सांस छोड़ते हुए बोले.

रमजान चाचा की बात सुनकर अनायास ही उसकी आंखे गीली हो गई. वह जामून लेकर अंदर चला गया. उसकी जोर-जोर रोने की इच्छा हो रही थी.

++++++++++++++++++++

ग़ज़ल

सारी कसमें सारे वादे सारा किस्सा भूल गये,
जबसे उसका साथ हुआ है अपना साया भूल गये।
बाबा-दादा भूल गये हम दादी अम्मा भूल गये,
जबसे हमने गॉव को छोड़ा रिश्ता-नाता भूल गये।
बेखुद हमको पहुचॉया लोगों ने उसकी चौखट तक,
देख के उसको ही हम अपने घर का रास्ता भूल गये।
जबसे उसका साथ हुआ तब से खुद की खबर नहीं,
जाने क्यों उसके चेहरे में अपना चेहरा भूल गये।
नयी सदी के इन बच्चों का देखो कैसा हाल हुआ,
घर से पढ़ने को निकले स्कूल का बस्ता भूल गये।
खुदगर्जी की भीड़ में 'गुलशन' कितना खोया मत पूछो,
प्यार में उसके हम भी यॉरों मंगहा-सस्ता भूल गये.

डॉ० अशोक 'गुलशन', बहराइच, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++++++++++++++

कभी न कभी

इस अंधेरी रात की, सुबह होगी कभी न कभी,
कंटीली राहों को मंजिल, मिलेगी कभी न कभी!
नसीब के बाजू को थामते सपने,
अधरखुली ऑखों में, जन्नत का समां।
फलक पै बैठ के, दुनियॉ को जीत लेने के ख्वाब
कमल उम्मीद के, खिलेगें कभी न कभी।
जहॉ के दर्दो-गम, सीने से लिपटाये हुए,
फिर सुबह आयेगी, वहीं आस वही चाह लिए।
रहेंगी बेड़िया, कब तक यूं किस्मत के पावों बंधी।
खुलेगें द्वार अंधेरी गुफा के कभी न कभी!
जो हाथ अपने लग जाती इक जादू की छड़ी,
जहॉ को स्वर्ग, आदमी को बना देते खुदा,
न रहती भूख, गरीबी और बेकारी की तड़प,
मिलेगा उम्मीद का जहां, कभी न कभी।
इसी तलाश में, हम राहे रवां मंजिल है,
के मसीहा कोई, सिर पै हाथ धर देगा
संभल उठेंगी कश्तियां, तूफान किनारा देगा,
दरियायें किस्मत, होगी-पार, कभी न कभी।
इस अंधेरी रात की सुबह होगी कभी न कभी
कंटीली राहों को, मंजिल मिलेगी कभी न कभी।

इन्द्र बहादुर सेन, पिथौरागढ़, यू.ए.

++++++++++++++++++++++++++++++++++

गीत

तरंगीत भावनाओं को हटा दो दूर रहने दो
अभी तो इन व्यथाओं से बहुत व्याकुल है मेरा मन
ये बस्ती है अभावों की यहां टूटा हृदय घायल
नचाया उलझनों ने है गिरी है टूटकर पायल
हमारा हर हितैषी ही हमारा बन गया दुश्मन
वो बोले बाद पतझड़ के बहारें आएंगी इक दिन
इसी उम्मीद पर हमने गुजारें है हजारो दिन
मिले कांटे ही कांटे है गलत निकले है अश्वासन
समझ पाया हूँ मैं इतना कि ये संसार झूठा है
बहुत कुछ है समझने को अभी तो दिल ही टूटा है
ये कहते टूटते तारे करे शबनम यही क्रन्दन

प्रमोद पुष्कर,कोटरा, भोपाल, म.प्र.

निराली अदा है!

हर इक रंग तेरी निराली अदा है।
यूं लव-लव में नव-नव रसोत्सव सदा है।
बढ़े पाप धरती पर अवतार होगा।
गीता में यही कृष्ण का वायदा है।।१।।
पल-पल पलक में तो ख़लक खूब पाया।
ना पाया परम पन्थ में आपदा है।।२।।
कलप कल्पना को पलटो तुम पलक में।
वह होने दो सब जो होना बदा है।।३।।
सभी सब प्रकारों में सुन्दर मधुर है।
वह सुख-शान्ति-सुविधा तवंगर-गदा है।।४।।
यहॉ या वहॉ जो कहीं कुछ भी पाएँ
बुराई की छोड़े यही कायदा है।।५।।
परम प्रेम में हम सभी एक-एक हैं।
सहज-भक्ति में कौन कहॉ अलहदा है।।६।।
अनुग्रह समझकर सकल सिद्धि पाएँ।
कहॉ भर किसी पर किसी का लदा है।।७।।
रहीमों-रमैया की सब पर महर है।
रहम हो रहा यहॉ यदा या तदा है।।८।।
ये हिन्दु-मुस्लिम-पारसी या ईसाई।
कहॉ किसका किससे कहो खूँ जुदा है।।६।
ये मन्दिर-मस्जिद के झगड़े बुरे हैं।
लड़ाई में किसको कहॉ फायदा है।१०।।
परमाणु-न्यूट्रान-रॉकेट-मिसाईल।
बना बम समझते क्यों खुद को खुदा है।।११
यदि 'पारदर्शी' प्रभु-भक्ति-प्रेम पाएँ।
तो चारों तरफ सम्पदा-सम्पदा है।।१२।।

छन्दराज ॐ पारदर्शी, उदयपुर, राजस्थान

अ.भा.अगीत परिषद् की मासिक कवि-गोष्ठी सम्पन्न

अ.भा. अगीत परिषद् के तत्वावधान में कवि-गोष्ठी का आयोजन श्री पार्थो सेन के संयोजकत्व एवं डॉ० रंगनाथ मिश्र 'सत्य' की अध्यक्षता में में सम्पन्न हुआ.

गोष्ठी के मुख्य अतिथि श्री रविकान्त खरे-बाबाजी, विशिष्ट अतिथि एवं केन्द्रीय कवि श्री त्रिवेनी प्रसाद दूबे'मनीष', अति विशिष्ट अतिथि डॉ. श्याम गुप्त, विशेष अतिथि श्री सुरेन्द्र कुमार वर्मा थे.

श्री रामबहादुर की वाणी वन्दना से प्रारम्भ हुआ कवि गोष्ठी में सर्वश्री डॉ. रंगनाथ मिश्र 'सत्य', सुरेन्द्र कुमार वर्मा, पार्थो सेन, सूर्य प्रसाद मिश्र, श्रीकृष्ण सिंह 'अखिलेश', तेज नारायण श्रीवास्तव 'राही', राम बहादुर 'अधीर पिण्डवी', चन्द्रभान, डॉ० कृष्ण नारायण पाण्डेय, मंजुश्री 'प्रीति', अनुपमा मिश्रा, चन्द्र प्रकाश पाठक, देवेश द्विवेदी, राम प्रकाश शुक्ल, रमाकान्त शुक्ल, गिरिश चन्द्र वर्मा, अनपढ़ अलंकारी, सच्चिदानन्द पाठक, संकटा प्रसाद श्रीवास्तव, राजेश कुमार द्विवेदी आदि ने अपनी-अपनी कविताओं का पाठ किया.

'राना लिधौरी' पुरस्कृत

म.प्र. लेखक संघ के टीकमगढ़ के जिलाध्यक्ष राजीव नामदेव 'राना लिध ौरी' को भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के केन्द्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो, मुरार ग्वालियर द्वारा आयोजित मादक पदार्थो के दुरुपयोग के विरुद्ध, प्रेरणा देने वाले स्लोगन लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय २०००रु० नगद मिला. प्रथम पुरस्कार डबरा के धीरेन्द्र गहलोत ३०००रु० तथा तृतीय पुरस्कार ग्वालियर के रतिराम वर्मा को १०००रु० मिला. पुरस्कार नारकोटिक्स आयुक्त श्रीमती जगजीत पवाड़िया जी द्वारा दिया गया.

कवियित्रि तारा सिंह को कवि कुलाचार्य

साहित्य संगम, उदयपुर द्वारा छायावादी कवयित्रि तारा सिंह मुबई को उनकी अभूतपूर्व साहित्यिक सेवाओं के लिए 'कवि कुलाचार्य' की मानदोपाधि द्वारा अलंकृत किया गया. विदित हो कि डॉ. तारा सिंह को साहित्यिक, सांस्कृतिक कला संगम अकादमी, प्रतापगढ़ द्वारा साहित्य वारिधि, भारतीय साहित्यकार संसद, समस्तीपुर एवं विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा 'विद्या वारिधि मानदोपाधि से विभूषित किया जा चुका है. डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर की जन्मस्थली, इंदौर में अनोखा विश्वास पत्रिका द्वारा आयोजित चतुर्थ अखिल भारतीय सम्मान समारोह में 'डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर साहित्य रत्न पुरस्कार २००७, मिल चुका है. श्रीमती सिंह अब ५८ विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित की जा चुकी है.

चर्चित देश

है चर्चित वह देश जहाँ
गली-गली में भिखमंगा हो
कुर्सी पे मूर्ख लफंगा हो
रोज जातीय दंगा हो
बहती खून की गंगा हो
फैशन में नारी नंगा हो।।

आश्वासन

नेताजी ने चुटकियों में
किया समस्याओं का हल।
मिल गया जनता को
आश्वासन का बल।।

राजीव नयन तिवारी,
दुमका, झारखंड

++++++++++++++++++++

राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान २००८ हेतु प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

अ.भा. साहित्य संगम २६१/३, ताम्बावती मार्ग, आयड़, उदयपुर-३१३००१ सम्पूर्ण देश के प्रतिभाशाली साहित्यकारों, कवियों, लेखकों एवं सम्पादकों से वर्ष २००८ के राष्ट्रीय सम्मानार्थ प्रविष्ट्रयाँ आमंन्त्रित करता है. संस्था के संस्थापक छन्दराज ऊँ पारदर्शी ने यह जानकारी देते हुए बताया कि सम्मानोपाधियों में कवि-कुलाचार्य, कवि-सम्राट, अक्षरादित्य, कलम-कलाधर, काव्य कुमुद, काव्य-कौस्तुभ, काव्य-कल्पतरु, काव्य कुमुदिनी, काव्य-कल्पेश, काव्य-कलावंत, काव्य-कलानिधि, काव्य-किरण, काव्य-कादम्बिनी, काव्य-कदम्ब, काव्य-कल्पज्ञ, काव्य-केसरी, साहित्य-सागर, साहित्य-सुघट, साहित्य-सरोज, साहित्य-संजीव, साहित्य-संजय, साहित्य-सुदर्शन, साहित्य-सुधाकर, साहित्य-सुरभि, साहित्य-सौरभ, साहित्य-सरताज एवं साहित्य-सर्वज्ञ की सम्मानोपाधियाँ उनके साहित्यिक योगदान के आधार पर प्रदान की जाएगी. इच्छुक प्रतिभागी अपनी श्रेष्ठ पुस्तक हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, गुजराती, मराठी एवं अंग्रेजी भाषा में मुद्रित की दो प्रतियां, अपना संक्षिप्त परिचय, एक रंगीन फोटो तथा स्वयं के दो पतायुक्त पोस्टकार्ड २५/-रु० के छोटे पोस्टेज टिकिट के साथ २८ फरवरी २०००८ तक पंजीकृत डाक अथवा कोरियर से भिजवा सकते है.

नेत्रदान जीवनदान है

सुरजीत सिंह साहनी, राजस्थान

नेत्रहीन व्यक्ति जो आजीवन ईश्वर की सर्वोत्तम रचना संसार की चका-चोंध ा को निहार नहीं पाता है "प्राणी क्या मेरा क्या तेरा" के अनुरुप मानव को सच्चा आनन्द परमार्थ से प्राप्त होता है, न कि स्वार्थ से, यद्यपि वह जीवन पर्यन्त अपने स्वयं के स्वार्थ की पूर्ति में ही लिप्त बना रहता है. यह नशवर शरीर "पॉच तत्व को तन रचयो" हाड़ मॉस पॉच तत्वों-हवा, पानी, मिट्टी, आग एवं आकाश से निर्मित है जो किसी भी क्षण, पल झपकते ही राख की ढेरी में परिवर्तित हो जाता है.

"जैसे जल ते बुद-बुदा" अर्थात बिना अस्तित्व वाला जल का बुल-बुला क्षण भर में जल के बहते प्रवाह में ही विलीन हो जाता है उसी प्रकार मनुष्य के जीवन का पल भर का भी भरोसा नहीं है कि अगली सांस आवे अथवा नहीं, तो फिर मृत्युपरान्त अपने नेत्रों का दान करने में हिचक किस बात की हो रही है. नेत्रदान से प्राप्त नेत्रों के प्रत्यारोपण से नेत्रहीन व्यक्ति अपनी नेत्र ज्योति प्राप्त कर संसार की सम्पूर्ण खुशियों का आनन्द ले सकता है, आवश्यकता है तो केवल पहल एवं समर्पण की.

हमारे देश में नेत्रदान की गती बहुत धीमी है क्योंकि भारत की अपेक्षा श्रीलंका में ही नेत्रदान अधिक होता है. देश में इस समय प्रतिवर्ष लगभग १५ हजार नेत्र ही नेत्रदान करने से प्राप्त होते है जो कि न्यूनतम है. किसी भी व्यक्ति की मृत्यु के ६ घण्टे के भीतर-भीतर यदि उसकी ऑख से कार्नियां निकाल लिया जावे तो वह काम आ सकता है. निकाले हुए कार्निया को २४ से ३६ घण्टे के भीतर प्रत्यारोपित किया जाना आवश्यक होता है.

हर कोई व्यक्ति नेत्रदान कर सकता है-मधुमेह का रोगी, बच्चा, बूढ़, कमजोर दृष्टि वाला, मोतियाबिंद का रोगी, इत्यादि. बच्चों में अधिकतर पुतली का अन्धपन होता है. प्रत्येक वर्ष ४० से ५० हजार व्यक्ति पुतली के अन्धेपन से ग्रसित हो जाते है. १० लाख से भी अधिक व्यक्ति नेत्र दान से दृष्टी पाने की प्रतीक्षा में है. नेत्रदान से चेहरा विकृत नहीं होता है. कार्निया पर ना तो आयु का प्रभाव पड़ता है और नाही कार्निया कभी खराब होता है. मरने वालों में से यदि कुछ ही प्रतिशत व्यक्ति नेत्रदान करे तो देश में पूर्ण अंधतानिवारण हो सकता है क्योंकि प्रतिवर्ष लगभग सवा करोड़ व्यक्तियों की मृत्यु हो जाती है.

इस समय भारत में १५ मिलियन तथा सम्पूर्ण विश्व में ४५ मिलियन लोग नेत्रहीन है. आपके द्वारा किया हुआ नेत्रदान किसी के जीवन में उमंग और खुशियां भर सकता है, इससे बड़ा परमार्थ क्या हो सकता है. स्वयं नेत्रदान कीजिये और अपने पारिवारीक सदस्यों से नेत्रदान हेतु संकल्प लीजिये. अपने मित्रों, सम्बन्धि ायों एवं समाज को नेत्रदान हेतु प्रेरित कर परमार्थ के कार्य में सहायक बनें. नेत्रदान के प्रति आम नागरिकों में व्याप्त भ्रांतियां एवं अंधविश्वासों का निराकरण कर पुनीतकार्य हेतु प्रेरित करे. जरा सोचों साथ क्या जायेगा, यह नाशवान शरीर तो यही भस्म की ढेरी में परिवर्तित हो जायेगा. भागीरथ बन सेवा भावना से पुण्य कमाईये. नेत्रदान ही श्रेष्ठ दान है, महादान है, जीवनदान है क्योंकि ऑखे ही आत्मा का प्रतिबिंब होती है.

++++++++++++++++++++

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

1. मधुशाला की मधुबाला	:	लेखक : राजेश कुमार सिंह	मूल्य 10.00
2. अपराध	:	लेखक : राजेश कुमार सिंह	मूल्य :10.00
3. सुप्रभात	:	दस रचनाकारों का संग्रह	मूल्यः 10.00
4. निषाद उन्नत संदेश	:	लेखकः चौ0 परशुराम निषाद,	मूल्यः 10.00
5. अदभुत व्यक्तित्व	:	लेखकः गोकलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्यः 10.00
6. रोड इंस्पेक्टर, लघु उपन्यास	:	लेखकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्यः 20.00
7. साहिलों के पार	:	कवित्रिः अर्चना श्रीवास्तव	मूल्यः 70.00

पुस्तकों के लिए भेजें/लिखेंः मनीआर्डर/डी.डी.

सचिव, विश्व हिदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

नोटः विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के सदस्यों को पचास प्रतिशत की छूट प्रदान की जाएगी.

ज्योतिष

संतान प्राप्ति के लिए वायव्य कोण में शयनकक्ष रकखें

जीवन का एक-तिहाई भाग हम अपने शयनकक्ष में ही व्यतीत करते हैं. दिन के लगभग आठ घंटे इसी स्थान पर बीतते हैं. स्थान विशेष की ऊर्जाएं एवं शक्तियां हमारी अंतर्चेतना पर किसी न किसी रुप में प्रभाव डालती हैं और हमारी विचारधारा को उसी के अनुरुप ढाल देती हैं. अतः यह आवश्यक हो जाता है कि अपने स्वास्थ्य और जीवन को सुचारु रुप से चलाने के लिए हम शयनकक्ष संबंधी वास्तु के नियमों का अनुसरण करें. वास्तु नियमों के अनुसार ईशान कोण, आग्नेय कोण और भवन के मध्य अर्थात ब्रहमस्थान में शयनकक्ष का निर्माण कदापि न करें. नैऋत्य कोण और दक्षिण दिशा के क्षेत्र में गृहस्वामी अथवा बड़े पुत्र का शयनकक्ष बनाना उत्तम है. नैऋत्य कोण पृथ्वी का तत्व का क्षेत्र है.

इस क्षेत्र में शयनकक्ष होने से व्यक्ति के जीवन और स्वभाव में स्थिरता के भाव उत्पन्न होते है. विवेकशक्ति में वृध्दि और महत्वपूर्ण कार्यो में उचित निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है. घर के बुजुर्ग सदस्यों के उत्तम स्वास्थ्य के लिए भी नैऋत्य कोण में शयनकक्ष लाभप्रद है. जिन परिवारों में बड़े बुजुर्ग की राय को घर या व्यवसाय में अंतिम निर्णय माना जाता है, उनका शयनकक्ष बहुधा नैऋत्य कोण में ही निर्मित होता है. आग्नेय कोण अग्नि तत्व प्रधान क्षेत्र होने से यहां अधिक समय व्यतीत करने वाले व्यक्ति में हमेशा अपनी बात पर अड़ने और जल्दी उत्तेजित होने की प्रवृत्ति रहती है. अग्नि तत्व का क्षेत्र होने से दंपती को अपना शयनकक्ष यहां नहीं बनाना चाहिए. यहां शयन करने से परस्पर विवाद पराकाष्ठा तक पहुंच जाएगा. दब्बू और शर्मीले बच्चों को इस स्थान पर सुलाए जाए तो उनमें आत्मविश्वास का संचार होगा. नवविवाहित दंपती और गर्भवती स्त्रियों के लिए आग्नेय में बना शयनकक्ष उचित नहीं है.

वायव्य कोण में बना शयनकक्ष विवाह योग्य कन्या के लिए उत्तम है. यह स्थान संतान प्राप्ति के इच्छुक दंपती के लिए भी उचित है. कम उम्र के ब च्चों का शयनकक्ष इस क्षेत्र में न बनाएं, क्योंकि वायुप्रधान क्षेत्र में सोने से मन अधिक चलायमान होगा और एकाग्रता में कमी होगी. यह क्षेत्र अतिथिकक्ष बनाने के लिए उचित स्थान है. ईशान कोण में शयनकक्ष निर्माण करने से ध ान हानि और कार्यबाधा जैसे परिणाम आते हैं. इस क्षेत्र के शयनकक्ष से स्वतंत्र इच्छाशक्ति और विवेक में कमी होकर उनकी निर्णय क्षमता प्रभावित होती है. शयनकक्ष का निर्माण कभी भी ब्रहमस्थान पर न करें. यह स्थान अधिकतम ऊर्जा संग्रह करता है. सोते समय ऐसी ऊर्जा का प्रवेश उचित नहीं है, क्योंकि शयनकक्ष का मुख्य उद्देश्य मानसिक और शारीरिक थकान से मुक्ति प्राप्त करना है और इसके लिए शयनकक्ष का वातावरण शांत और सुरुचिपूर्ण होना आवश्यक है.

साभारः हिंदी ज्योति बिंब

बाबा साई दर्शन दों

बाबा सांई बाबा दो दर्शन,
प्रेम-भाव झरने का हो वर्षन।
नहीं जगत-मरुथल में हरियाली,
मिले कृपा से सभी खुशिहाली।
हृदय में हो भक्ति-भाव आकर्षण,
बाबा सांई बाबा दो दर्शन।
जीवन हाय-हाय करते बीता,
घट भर लाये जो भयो रीता।
काटो पाप उठा हाथ सुदर्शन,
बाबा सांई बाबा दो दर्शन।

++++++++++++++++++++++

सांई बाबा मेरे, आया शरण तुम्हारी
अब तक भूल अनेक करी,
आज परो तेरे दरबारी।
जो सम्बंध जगत से जोड़े,
मन-पीर बढ़ावन हारे,
दुःख की चादर लिपट-लिपट,
सुख ही सब भयो किनारे।
आज एक सहारा सांई हो
जीवन दीप उजारी,
सांई बाबा मेरे, आया शरण तुम्हारी।
सत्य-भाव की अभिलाषाएँ,
उसके अंतर करें निवास,
सभी कुछ छूटे जगत में,
न छूटे तुम्हारा विश्वास।
शिरडी की पावन धरती,
हुई स्वर्गधाम से न्यारी,
सांई बाबा मेरे, आया शरण तुम्हारी।
सांई धूनी जले निरंतर, भष्म करे सब पाप,
दुःख झेलते बीता जीवन, पर न सांई जाप।
जन्म मिला मानुष का तुझको,
यही पुण्य की बात,
पशुवत जनम गंवाय के रे, किया पुण्य आघात।
जेहि सुख कारण करे कुकर्म, वही बना अभिशाप,
दुःख झेलते बीता जीवन, पर न सांई जाप।
छोटा सा यह जीवन यहॉ, बहु भेद बनाये,
आगे का जो लम्बा रास्ता, ता के कष्ट मिटाये।
हृदय भया रे इतना मूढ़ जोरे सब संताप,
दुःख झेलते बीता जीवन, पर न सांई जाप।

पं. नरेश कुमार शर्मा, मुंबई

++++++++++++++++++++

लोगों की इसमें बढ़ चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए

पत्रिका का जून अंक प्राप्त हुआ. प्रकाशित कहानी, अध्यात्म विषयक लेख, कविता, लघुकथा सहित अन्य रचनाएं रोचक एवं प्रशंसनीय है. यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आपने स्नेहाश्रम बनाने का निर्णय लिया है. अनाथ लोगों और वृद्धजनों के लिए सचमुच संस्था आशा की किरण लेकर आ रही है. परोपकार की भावना रखने वाले लोगों की इसमें बढ़ चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए. अंत में मेरा व्यंग्य वाण नरक में नेताजी प्रकाशित करने के लिए विशेष आभार.

श्रीकान्त व्यास, पटना, बिहार

++++++++++++++++++++

हिन्दी साहित्य के लिए व्यक्गित योगदान होगा

मुझे अवगत हुआ है कि आप मुम्बई निवासी देश की प्रतिष्ठित साहित्यिक विभूति डॉ. तारा सिंह पर एक विशेषांक निकालने जा रहे है. यह बड़ी प्रसन्नता की बात है, इसी प्रकार से आप यदि समय-समय पर आपकी लोकप्रिय पत्रिका से जुड़े साहित्यकारों पर विशेषांको के माध्यम से थोड़ा बहुत ध्यान देते रहेंगे तो यह हिन्दी साहित्य के लिए आपका बड़ा और व्यक्गित योगदान सिद्ध होगा.

इन्द्र बहादुर सेन, पिथौरागढ़

++++++++++++++++++++

पत्रिका का मूल्य बढ़ाने की गुजाइंश है

आपकी पत्रिका का अगस्त अंक मिला. धन्यबाद. आप पत्रिका के माध्यम से साहित्य तथा साहित्यकारों की जो सेवा सम्मान कर रहे है वह प्रशंसनीय है आप के अंक भी समाजदर्शी होते है. गाय और गीता पर पठनीय निबंध है. हिन्दी तो हम लोगों की प्राण ही है फिर उसका पत्रिका में छाया रहना कोई अनहोनी बात नही है. पत्रिका का कलेवर, कागज, मुद्रण तथा सामग्री को अधिक प्रभावशाली बनाकर इसकी प्रतिष्ठा बढ़ाई जा सकती है. जब तक विज्ञापनों की व्यवस्था न हो स्तरीय पत्रिका चलाना छापना तथा बेचना संभव नहीं होता. इसका मूल्य बढ़ाने की गुंजाइश अभी है. हमारी शुभकामनाएं स्वीकारें.

राजेश्वरी शांडिल्य, अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद, लखनऊ

++++++++++++++++++++

डॉ०राज अंक तो लम्बे समय तक याद रखा जायेगा

पत्रिका का हर अंक भारतीय साहित्य से समृद्ध होता है. पत्रिका के रुप में आप का प्रयास सफल है. डॉ० बुद्धिराजा अंक तो लंबे समय तक याद रखा जायेगा तथा भविष्य में दस्तावेज की तरह प्रयोग में लाया जायेगा. एक सुझाव है, रचनाकारों के पते अवश्य छापा करें, ताकि व्यक्तिगत संवाद कायम किया जा सके.

भारतीय साहित्यकाश में पत्रिका हमेशा ध्रुवतारे की तरह प्रकाशमान होती रहेगी.

शब्बन खान 'गुल', लखनऊ

++++++++++++++++++++

मै साहित्य जनमंच का पाठक हूँ. इसी मे मैने आपके द्वारा संपादित 'विश्व स्नेह समाज' की जानकारी पढ़ी. मैं इस पत्रिका पाठक बनना चाहता हू. अतः मुझे इस अभीष्ट पत्रिका की एक प्रति नमूनार्थ अवलोकन हेतु प्रेषित करने का कष्ट करें. कृपया इसका वार्षिक शुल्क भी लिखें.

बालकृष्ण लावा, चूनागढ

++++++++++++++++++++

हमने आपका समाचार पत्र पढ़ा, पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई. आपके समाचार पत्र में अच्छे लेख एवं समाचार पढ़ने को मिलते हे इसके लिए आप धन्यबाद के पात्र है.

अभिराम गोयल,अलीगढ़, उ.प्र.

++++++++++++++++++++

विश्व स्नेह समाज की प्रति मिली. अंक बहुत ही रुचिकर लगा. बधाई

सपांदक, क्षणदा

++++++++++++++++++++

आत्मीय, आज भोर की प्रथम दिव्य रश्मि के उतरकर, आपके आंगन में आने के साथ ही मेरा चंदन वंदन. आपकी मधुर स्मृति ज्ञान परमाणुओं पर उभर आई. प्रदर्थ कलम ने लिखना शुरु कर दिया.

मधुमय आज,
सुरभिमय कल हो।
आगत आपका
हर पल मंगलमय हो।

वंशी लाल पारस, भीलवाड़ा, राजस्थान

++++++++++++++++++++

आपका पता हिन्दी प्रचारक पत्रिका से प्राप्त हुआ. कृपया एक प्रति 'बुद्धिराजा अंक' की प्रेषित करवाने की कृपा करें. विश्व स्नेह समाज पर परिचयार्थ सामग्री यदि उपलब्ध हो तो भिजवाने का कष्ट करें.

डॉ. एस.आर. खत्री, बारमेर, राजस्थान

++++++++++++++++++++

ईश्वर आपके सभी संकल्प पूर्ण करे

पत्रिका का जून ०७ अंक प्राप्त हो गया है. आपने एक महान संकल्प लिया है और दिशा में यात्रारत भी है. ईश्वर आपके सभी संकल्प पूर्ण करे. यही शुभकामना है. जहॉ चाह होती है वहॉ राह अवश्य ही मिलती है. आपका कथन सही है बूँद बूँद से ही समुद्र भरता है. आपके इस महायज्ञ में मैं सत्प्रेरित करने की दिशा में प्रयत्नशील हूँ.

सनातन कुमार वाजपेयी, जबलपुर

आपकी पत्रिका का प्रथम बार परिचय हुआ. जिस स्तर पर पत्रिका का सम्पादन कार्य है अच्छा लगा. कई स्तम्भ अच्छे है. आजकल की पत्रिकायें केवल पार्टियों की पत्रिकायें बनकर जिवित रहती है परन्तु उनका आकलन मात्र सतही रह जाता है. स्पष्ट कहना कठिन है जबकि समाज में सच सुनना कठिनतर हो गया हो ऐसे में सत्य भान कराना लोहे के चने चबाने जैसा ही है. जहा हर ओर भ्रष्ट नेता और कर्मचारी हो. ऐसे में रक्षा का दायित्व केवल लेखक और कवि ही कर सकता है क्योंकि कलम की कोई काट नहीं हो सकती है. आपकी पत्रिका में छोटे कवियों का आना महत्वपूर्ण है. उनको आधार मिला है अच्छी बात है. भाई अभय कुमार ओझा की कहानी विछुड़ल प्यार काफी हृदय स्पर्शी है. इस प्रकार की कहानियां हृदय को झिझोरकर रख देती है. रामसहाय वर्मा का व्यंग्य ‘स्वान और इन्सान’ इन्सान को जगाने के लिए काफी है न की स्वानों की जगाने के लिए प्रयास अच्छा है, अच्छी चोट है. जाली नोट के पहचान के लिए जानकारी ही अच्छा प्रयास है. मानव के लिए हितकर है.

शेष प्रयासरत रहे सद्बुद्धि एवं विचारों से पूरित रखे, सच को आप यदि अपनाने का निरन्तर प्रयास करते रहेगें तो अच्छा कार्य मानकर आपको सम्मान मिलेगा.

शोभाराम वर्मा, बाराबंकी, उ.प्र.

++++++++++++++++++++

पत्र की संपादन कला अत्यंत मोहक है. रचनाएं उम्दा है, ज्ञानवर्द्धक भी.

डॉ०स्वर्ण किरण, संपादक, नालंदा दर्पण, नालंदा, बिहार

++++++++++++++++++++

पत्रिका कम मुल्य में उम्दा साहित्य उपलब्ध करवाती है. यह इसकी विशेषता है. पत्रिका की कीमत उसमें समाहित साहित्य से कि जानी चाहिए न की उसकी प्रिंटिंग व सुनहरे कागजों से. जगन्नाथ विश्व की हास्य कविताए अच्छी लगी है. मरियम्मन ही शीतला माता यह जानकारी अमूल्यवान है.

महेश प्रकाश व्यास,बीकानेर, राजस्थान

++++++++++++++++++++

मैंने आप द्वारा प्रकाशित विश्व स्नेह समाज का अगस्त०६ अंक राजेश जी शर्मा पुरोहित द्वारा प्राप्त कर पढ़ा. कविता, कहांनिया अच्छी लगी. साथ ही आप द्वारा चलाई गई योजनाओं की जानकारी मिली. मैं पत्रिका सदस्य बनना चाहता हूॅ. इस जानकारी भेजने का कष्ट करें.

पूरनमल सेन, भवानीमण्डी, राजस्थान

++++++++++++++++++++

आपके सम्पादन को प्रणाम

पत्रिका का जून अंक मिला. पूरा पढ़ा. बहुत प्रिय लगा. साथ ही आपके सम्पादन को प्रणाम जो इतनी अच्छी रचनाएं पढ़ने को दी. इसी अंक में मेरी दो लघुकथाओं को स्थान देने के लिए आभार. आशा है भविष्य में भी प्यार/स्नेह और अपनापन देते रहेगें.

डॉ.पूरन सिंह,वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली

++++++++++++++++++++++++++

मान्यवर, सादन नमन! प्रणाम! वन्दन! अभिनन्दन. आपके द्वारा भेजी गई पत्रिका प्राप्त हुई. आपकी इस महानता-बड़प्पन के लिए कृतज्ञ हूॅ. आभारी हूॅ. आप जैसे विद्वान, सादर मनीषी सम्पादक/पत्रकार/लेखक कलम के धनी के समक्ष मैं अपने को अकिंचन, सामान्य छोटा समझता हूॅ. लिखने पढ़ने का भाव रुचि आप जैसे सुविख्यात जनो मेधावी प्रतिभावान सज्जनो के प्रोत्साहन का प्रतिफलहै. कृपा बनाएं रखे.

डॉ० रामसिंह यादव, उज्जैन, म.प्र.

++++++++++++++++++++

मान्यवर, सप्रेम नमस्कार, जन्म दिवस की हार्दिक बधाई स्वीकारें. पत्रिका का अंक पढ़कर हर्ष हुआ. आपका श्रम सार्थक हो, ईश्वर से पत्रिका की प्रगति की कामना करता हूॅ.

राजा घाटचवरे,संपादक,रायपुर, छत्तीसगढ़

++++++++++++++++++++++++

पत्रिका का अंक मिला. मेरी लघु कथा प्रकाशित करने के लिए धन्यवाद. समाज में यूं ही स्नेह-सरिता बहाते रहिए. हमने पढ़ा/विश्व स्नेह समाज/मानस खिला।

डॉ. मिर्ज़ा हसन नासिर, लखनऊ

++++++++++++++++++++

आपने सामग्री चयन में बहुत ही परिश्रम किया है

पत्रिका का अंक हमें बराबर मिल रहा है. आशा है हमारी पत्रिका अध्यात्म अमृत भी आपको बराबर मिल रही होगी.

पत्रिका डॉ. राज बुद्धिराजा विशेषांक बहुत उपयोगी ज्ञानवर्धक व संग्रहणीय है. इस विशेषांक के लिए आपने सामग्री चयन में बहुत ही परिश्रम व कुशलता के साथ सम्पादित किया है. अतः आपको बहुत-२ बधाई. पत्रिका प्रगति की ओर निरन्तर अग्रसित है. अनेक संस्थाये भी आप संचालित कर रहे है. बहुत परोपकार व जनकल्याण के कार्यो से राष्ट्र व समाज सेवा में संलग्न है.

कृष्णचन्द्र टवाणी, प्र.संपादक, अध यात्म अमृत,किशनगढ़, राजस्थान

इनके भी पत्र मिले-

१.**हरिश्चन्द्र गुप्ता,** ग्वालियर, म.प्र.
२.प्रबंधक, इंडियन रेडियो एण्ड टी.वी. क्लब, अमरावती, महाराष्ट्र
३.केशव वर्मा, बुलंदशहर, उ.प्र.
४.राधेश्याम परवाल, जयपुर, राजस्थान
५.बालाजी तिवारी,फिल्म संपादक, अंधेरी मुंबई
६.विदूषी शर्मा, शिमला
७.हरीराम शर्मा जागिड़, जोधपुर, राजस्थान
८.कपिलेश्वर, कटिहार
९.डॉ. महावीर सिंह,

पोस्टर

एक लड़का प्रतिदिन सड़क के किनारे एक पोस्टर रख देता और हर कोई आते-जाते उसके पास रखे छोटे से बाक्स में कुछ न कुछ डाल देता. वह बहुत ही खुश था. उसे अब भीख मॉगने नहीं जाना पड़ता. उसके जिन्दगी की गाड़ी अब सरकने लगी थी. बीमार मॉ अब ठीक हो चली थी. घर की हालत सुधर गयी थी.

एक रोज जब बाक्स को खोलकर पैसे निकालने लगा तो पैसों में उसे एक छोटा सा पर्स भी मिला. झपटकर उसे खोला तो उसमें कुछ पैसे और साथ में एक पत्र भी था. पत्र को पढ़ते ही वह अवाक् रह गया. वह आज घर नहीं गया और बाक्स के साथ पोस्टर लिए सीधे कस्बे के बाहर चला गया. जहॉ एक छोटी-सी झोपड़ी में टिमटिमाता हुआ लालटेन जल रहा था. द्वार पर आवाज लगाया तो एक बूढ़ा बाहर निकला. लड़का उसे तुरन्त ही पहचान गया. वह उसके पैरों पर गिर कर रोने लगा. बूढ़ा उसे बहुत समझाया. मगर वह रोता ही रहा. बहुत देर तक रोने के बाद उसने अपना अपराध स्वयं की कबूल किया कि वह हर रोज वहॉ से एक पोस्टर चुराकर ले जाता था. दिन भर उसे चौराहे के पास सड़क के किनारे लगाया रहता और फिर रात को उसे वहीं रख आता था. अगले दिन फिर वहीं काम दोहराता. इस प्रकार उसकी अच्छी आमदनी भी हो जाया करती थी. आज पर्स में जो पत्र मिला था. उसे उसी बूढ़े चित्रकार ने भिजवाया था. क्योंकि जो पोस्टर आज वह लड़का ले गया था. उसे कल ही किसी को देना था. अगर समय पर आज वह पोस्टर वापस नहीं लाया तो कल वह क्या देगा? इसीलिए उसने पत्र भिजवाया था. वह लड़का अभी भी उस बूढ़े चित्रकार का पैर पकड़े क्षमा मॉग रहा था. बूढ़े ने उसे उठाकर सीने से लगा लिया और उसे अपना बेटा मानकर वहीं ठहरने का आग्रह किया. तो लड़का उस महान व्यक्ति को झुककर प्रणाम किया और फिर अपनी कहानी बताया कि वह अत्यन्त ही गरीब था. और भीख मॉग कर अपना और बीमार मॉ का पेट भरता था. एक दिन वह भीख मॉगते-मॉगते यहॉ तक चला आया. बाहर से आवाज लगाया तो कोई बाहर नहीं आया था. काफी देर इंतजार करने के बाद वह झोपड़ी के अंदर झॉका, तो वहॉ वही बूढ़ा चारपाई पर सोया था. झोपड़ी में पेंट किए हुए अनेको पोस्टर रखे थे. उसे समझते देर नहीं लगी कि कि वह बूढ़ा एक चित्रकार है. जब उसने देखा कि बूढ़ा अपनी नींद में है, तो वहॉ रखे पोस्टरों में से एक उठाकर जल्दी से बाहर हो गया. फिर जल्दी-जल्दी अपने घर की ओर जाने लगा. रास्ते में उसे ख्याल आया कि अगर उसे कहीं रख दिया जाय तो अवश्य ही कुछ आमदनी हो जाएगी. इसलिए उसे सड़क के किनारे रखकर बैठ गया. थोड़ी देर में वहॉ पोस्टर देखने वालों की भीड़ इकट्‌ठी हो गयी और हर कोई जाते समय पोस्टर के पास कुछ न कुछ रखता जाता. इस तरह से शाम तक कुछ पैसे मिल गये. फिर तो उसका हर रोज का यही पेशा हो गया. हर रोज वह एक पोस्टर लाता और शाम तक सड़क के किनारे उसे रख आता. कभी-कभी वह सोचता कि क्या बात है वह जब भी आता बूढ़ा सोया ही मिलता और दरवाजा भी अक्सर खुला ही रहता. परन्तु फिर उसका ख्याल छोड़ देता. बूढ़े ने भी बताया कि जब पहलीबार पोस्टर गायब हुए तो वह बहुत ही परेशान हुआ, परन्तु अगले दिन उसे वापस पाकर वह अचम्भित हुआ. फिर ऐसे ही प्रतिदिन पोस्टर गायब होकर जब अगले दिन आने लगे तो उसके आश्चर्य की सीमा ही न रही. फिर नींद का बहाना बनाकर उसने पोस्टर ले जाते और फिर रखते भी देखा. देखकर भी उसने कोई आपत्ति नहीं की. क्योंकि हर अगले दिन पोस्टर आ जाते थे.

अगले दिन से बूढ़ा चित्रकार उसे लड़को को चित्र बनाना सिखाने लगा. लड़के में भी लगन थी. जिससे कुछ ही समय में वह एक कुशल चित्रकार बन गया. पूरे शहर में उसके बनाए हुए चित्रों की मॉग होने लगी. बूढ़े चित्रकार ने अपनी कला उसी को समर्पित कर दिया और वह गरीब लड़का उसका उपयोग कर एक अच्छा चित्रकार बन गया. **उमेश कुमार पटेल** 'श्रीश', महराजगंज, उ.प्र.

++++++++++++++++++++

सच

चौराहे पर वे सज्जन मिल गए. मुझसे नमस्ते की औपचारिकता पूरी कर कुछ-कुछ समझाने लगे. उन्होंने जो कुछ भी समझाया वह शुरु-शुरु में मुझे समझ में नहीं आया, पर फिर सही लगने लगा. उन्होंने देश के विकास की बात की, नौजवान पीढ़ी को सही दिशा में ले जाने की बात की, वयस्क वर्ग के अनुभव को काम में लाने की बात की, नैतिक मूल्यों के गिरने की बात की. कुल मिलाकर, आधे घण्टे में उन्होंने देश का सही मूल्यांकन कर दिया. मैं उनसे बेहद प्रभावित हुआ.

थोड़ी देर बाद चार मुस्तंड आए और उन्हें पकड़कर ले जाने लगे. मैंने विरोध किया तो वे बोले-"ये पागल है जो पागलखाने से भाग आया है."

मैं सोचने पर मजबूर हो गया, "क्या पागल सच बोलते है?"

डॉ.नरेन्द्र नाथ लाहा, ग्वालियर

मूल्यांकन

डॉ० नरेश पांडेय चकोर एक सधे हुए साहित्यकार है. लोकभाषा अंगिका की जितनी सेवा इन्होंने की है, उस तुलना में जीवित अंगिका साहित्यकारों ने नहीं किया है.

मूल्यांकन में कुल सैतीस लेखकों की पुस्तकों की समीक्षा है, सभी आलेख उनके बिहार प्रेम के द्योतक है क्योंकि सैतीस लेखकों में से अपवाद स्वरुप दो चार लेखकों को छोड़कर सभी रचनाकार बिहार के हैं. बिहार के सम्बंध में राज्य के बाहर के समीक्षकों द्वारा बिहारी पुस्तकों की चर्चा नहीं करना, डॉ० चकोर को गहराई से स्पर्श किया है और इस मिथक को मिटाने में उन्होंने समीक्षक की हैसियत से राज्य की अभूतपूर्व सेवा की है.

अखिल भारतीय भाषा-साहित्य सम्मेलन के साथ वे एक लम्बी अवधि से जुड़े है और भारतवर्ष के विभिन्न नगरों के आयोजित अधिवेशनों में उन्होंने सक्रिय रुप से भाग लिया. तभी से उनके मन में यह भावना जगी कि बिहार की अस्मिता और गौरव की श्रीवृद्धि में ऐसा कौन सा कदम उठाया जाय जिससे उसका सम्मान बड़े 'मूल्यांकन' की समीक्षाओं में गौरवबोध की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है.

सीमित अर्थ साधन में जैसा भी संभव हो सका 'मूल्यांकन का प्रकाशन उन्होंने सम्पूर्ण ईमानदारी के साथ किया है. जिन्होंने प्रकाशन में सहयोग दिया उनके प्रति आभार उन्होंने मुक्तकंठ से स्वीकार किया है. मूल्यांकन का प्रकाशन कर डॉ० चकोर ने राष्ट्रभाषा हिन्दी को एक महत्वपूर्ण ग्रंथ दिया है.

समीक्षकःनृपेन्द्र नाथ गुप्त
पुस्तक का नामः मूल्यांकन
लेखकः डॉ. नरेश पाण्डेय 'चकोर'
मूल्यः१४०/-रुपये मात्र
प्रकाशकःशेखर प्रकाशन, बोरिंग रोड, पश्चिम, ५६, गांधीनगर, पटना-८०००01, बिहार

ज़ियारत

प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह 'जियारत' एक अपने आप में अनूठा नाम है. इस ग़ज़ल संग्रह के नामकरण से ही ग़ज़लकार की सोच का अंदाजा लगाया जा सकता है. इस संग्रह में नाम के अनुरुप रचनाए भी है-देखिए-

तेरी दरगाह से मिलती जो इजाज़ तेरी
हम भी कर जाते किसी रोज़ ज़ियारत तेरी
++++++++++++++++++++++

मॉ की ममता को दर्शाते हुए-

इक सहेली की तरह करती है मुझसे प्यार मॉ
मेरे हर सुख दुख में रहती है शरीके कार मॉ।
आ लगा लूं बढ़ के मैं तुझ को गले, चूमूं तुझे
तू मिरी हमदर्द मॉ है, तू मिरी ग़मखार मॉ
++++++++++++++++++++
ये बरखा रुत ये बरसातें हमें अच्छी नहीं लगती
तिरे बिन चॉदनी रातें हमें अच्छी नहीं लगती.
+++++++++++++++++++++
कोई रंगी नज़ारा मिल गया है
कि जीने का सहारा मिल गया है
हमारा डूबना भी काम आया
जो डूबे तो किनारा मिल गया है।
+++++++++++++++++++++
एक दिन सब जहॉ से चल देंगे
साथ कब ज़िदगी के पल देंगे
ढलते सूरज को कौन पूछेगा
चढ़ते सूरज को लोग जल देंगे
++++++++++++++++++++++
वो मद भरी ऑखों में, डाले हुये काजल है
बस्ती में जिसे देखो, मदहोश है घायल है।

ज़ियारत-किसी तीर्थ स्थान की यात्रा या पुण्य व्यक्ति के दर्शन, कार-शामिल,मदहोश-बेसुध

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि यह संग्रह ग़ज़लकार की तपस्या का फल है. मुझे पुरा विश्वास है कि पाठक को यह ग़ज़ल संग्रह अवश्य ही पंसद आएगा और अनु जसरोटिया जी को भी एक मुकाम प्रदान करेगा.

समीक्षकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
पुस्तक का नामः ज़ियारत
गज़लकारः 'अनु' जसरोटिया
मूल्यः१००/-रुपये मात्र
प्रकाशकःदर्पन पब्लिकेशन, बी-३५/११७, सुभाष नगर, पठानकोट-१४५००१, पंजाब

//////////////////////

नहीं चाहिए मधुशाला

गॉव-गॉव और गली-गली में,
बजा-बजा कर ढोल
इसीलिए, हम खोल रहे हैं,
मधुशाला के पोल।

शायद ये पंक्तियां रचनाकार ने शराबियों की दुर्गति, उनके परिवारों की दुर्दशा को देखकर लिखा है. इस काव्य ग्रंथ को पढ़कर भी कुछ ऐसा हीं लगता है. इसमें न तो बच्चन जी मधुशाला का संपुट्य है और न अन्य किसी ग्रंथ का बल्कि एक रचनाकार की अपनी ऑखों देखी, सुनी व्यथा का संपूट है. इसके प्रमाण में रचनाकार ने कुछ अखबारों की कतरनें में इस ग्रंथ भी समाहित की है. जैसे-नशे के लिए ५०० में अपने बेटे को बेचा., मां ने शराबी बेटे को जहर देकर मार डाला आदि. देखिए पीने वालों को सावधान करती ये पंक्तियां-

हो सावधान! पीने वालो!
मधुशाला तुम्हें लुभायेगी,
मधुबाला सज-धज कर, तुमको

नित अपने यहाँ बुलायेगी।।
जाने पर साथी मिल जाते,
सब पीते वहाँ पिलाते है,
दुर्दिन में आते काम नहीं,
वे दो दिन हाथ मिलाते है।
शराबियों को सचेत करते हुए रचनाकार कहता है-
घर, घर ही तरह चलाना हो,
जब सुख के दीप जलाना हो
तब, घर देखो, ऐ घरवालों!
क्यों मदिरा के परवाने हो।
++++++++++++++++++
मधुशाला हर लेती विवेक,
विवेकहीन पीने वाले,
कौन उसे समझायेगा,
जो हैं ऐसे जीने वाले।
++++++++++++++
जान गये, पीना हराम है,
अब, कभी नहीं पीयेंगे,
जीवन मिला तो, जीना है,
सुख से सदा जीयेंगे।
++++++++++++++++++
भावुकता में हो विभोर तुम,
कभी न पीना वह हाला,
वह कवि नहीं जो तुम्हें सिखाये,
पीने को मधु का प्याला।
++++++++++++++++++++
नहीं चाहिए मधुशाला अब
नहीं चाहिए मधुबाला,
कितने गाओ गीत मगर, वह
मृत्युशाला है; मधुशाला।।
सर्वनाश करने वाली को,
नहीं कहें कोई मधुशाला,
घर-घर गूंज उठे नारों से,
नहीं चाहिए मधुबाला।।

समीक्षकः गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
पुस्तकः नहीं चाहिए मधुशाला
रचनाकारः लक्ष्मी निधि
मूल्यः७०/-रुपये मात्र
प्रकाशकःज्योत्स्ना-प्रकाशन, निधि-विहार, १७२, न्यू बाराद्वारी, पो० साकची, हूम पाइप रोड, जमशेदपुर,-१, झारखंड

पुस्तक समीक्षा

छायावादी कविताओं का संकलन

'विषाद नदी से उठ रही ध्वनि' डॉ. तारा सिंह के सद्य प्रकाशित काव्य संग्रह का शीर्षक है. यह उनकी ग्यारहवी पुस्तक है. अपनी बात में कवयित्रि ने कहा है-'जन्म से मृत्यु तक दुःख ही दुख है' इसके अलावा मानवकृत आर्थिक सामाजिक, अपमान, अत्याचार, अन्याय, शोषण तो है ही, यही तथ्य है इस नये प्रकाशित काव्य संकलन का सार संक्षेप. पहली कविता से मनुष्य के मन में मिलने की प्रतीक्षा का भाव साकार हुआ है. डॉ. तारा सिंह ने अलंकारिक भाषा में अपने मन्तव्य को अभिव्यक्ति दी है. वह कहती है कि मैं तुम्हारे मन के क्षितिज द्वार तक सशरीर ले जाने के लिए सोमरस का पान कराऊँगी और स्वर्ग तक ले जाऊँगी. राष्ट्रपिता को सम्बोधित कविता में शान्ति के दूत को उसके त्याग पूर्ण जीवन की यशगाथा है. जीवन संग्राम में प्रत्येक व्यक्ति को विजय प्राप्त नहीं होती. पराजय के डर से जीवन का प्रत्येक कोना व्याकुलता लिये होता है. इसलिये पूर्व जन्म की कथाओं के आधार पर अतीत का स्वरुप स्पष्ट होता है. गंगा कविता में मनोहारिनी अमृतमयी निर्मल स्नेहमयी धारा की महिमा का स्तवन है. अमरता प्रदान करने वाली इस नदी की अजस्र धारा को विनत भावांजलि है. प्रतिपल प्रकृति अपने परिधान बदलने में व्यस्त है. इस कविता में लेखिका ने कहा है कि सभी जानते है कि प्रकृति का आकाश की नीलिमा से सीधा सम्बन्ध है. 'यह कौन सी जगह है साथी' नामक कविता में अनेक प्रश्न और उत्तर है. जीवन का यह कौनसा मोड़ है जहाँ हर ओर अग्नि के स्फुलिंग है. पाव घायल है, शून्य का त्योहार है, हृदय के सागर में सुलगती हुई आग है, आदि प्रश्नों के सपाट उत्तर है.

'सुख के भस्म समूहों में चिनगारियाँ जिन्दी है' मे कहा है कि प्रियवर तुम अन्धकार में क्या ढूंढ रहे हो. जबकि धरती और आकाश पुष्पाच्छादित नवल किरणों भरी ज्योति को दृष्टिगत रखकर अपनी रुपहली किरणों से अमर स्नान कराने को तत्पर है. कवयित्रि अतीत के गौरव का गीत गुन गुनाने वाले अतीत को उन्मीलित नयनों से देख रही है.

मोहन दास कर्मचन्द गाँधी के अवतरण से सम्बधिंत कविता में कवयित्रि ने कहा है कि जब देश दावाग्नि से जल रहा था तो तुमने पुतली बाई माँ के घर जन्म लिया और मानवता के दुख दूर करने के लिए, अमीर गरीब के बीच की खाई को दूर किया. तुम स्वाधीनता के अमर सेनानी बनकर विश्व के मार्गदर्शक बन गये.

कवयित्रि अनुभव कर रही है कि नयनों ही नयनों में परस्पर होने वाली बातचीत हृदय की भावनाओं को व्यंजित करती है. अब तो वह सोते जागते हरि का नाम लेकर अपने आने वाले स्वर्णिम भविष्य की तलाश में जुटी है. प्रकृति के परिवर्तन के इस क्रम को भी कवयित्रि ने काव्य में अभिव्यक्त किया है.

इस प्रकार डॉ. तारा सिंह ने अपनी काव्य प्रतिभा से जो रचनायें इस संग्रह में प्रस्तुत की है उनमें छायावाद की स्पष्ट झलक मिलती है. अन्य सभी संकलनों की भाति इसका भी साहित्य में स्वागत होगा.

कवयित्रिःडॉ. श्रीमती तारा सिंह
प्रकाशकःमीनाक्षी प्रकाशन, दिल्ली
प्राप्ति स्थानः श्रीमती तारा सिंह
बी-६०५, अनमोल प्लाजा, प्लाट नं७, से० ८, खारघर नवी मुम्बई-४१०२१०
समीक्षकः कृष्ण मित्र